

Rg. N. B. 431.

श्रीपञ्चजयनन्दसूरि सद्गुरुन्यो नमः

श्री  
**आत्मानन्द प्रकाश.**

ॐ ॐ | स्वधरावृत्तम् ॥ | ॐ ॐ

लक्ष्मीवान् स्वीयलक्ष्मीं विसृजतु परमौदार्ययुक्तः सुकार्यं  
 विद्यावान् स्वीयविद्यां विनरतु परमादादाद्वै मुशिष्ये ।  
 लक्ष्मीविद्याद्वयं तनिवस्तु परमैक्येन सर्वेषु सत्यु  
 'आत्मानन्द प्रकाशाद्' भवतु सुखयुतो मर्यलोकोऽपिनाकः ॥१॥

पु. १८. | वीर सं. २४४६ आश्विन. आत्म सं. २५ | अंक ३ जो

प्रकाशक—श्री जैन आत्मानन्द सभा—भावनगर.

विषयानुक्रमणिका.

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
१ श्री जूनवर स्तुति ...	६७	६ ओङ्क सुयना ...	६०
२ व्यक्तियार निंदा ...	६८	७ अंथावलोक्तन ...	६०
३ लैन तीर्थ जीभपद्धति अने रामसैन्य ६६	८ प्रकृतिर्ण नेधना संभवं धर्मो खुलासो ६१		
४ सहानुभूतिथी अवन साक्ष्य ...	८१	९ वर्तमान सभाचार ...	८१
५ आपश्ची लावी उन्नतिनी दिशा (सं १० आ सभाएँ करेल करावे) ...	८२		
मण्डने आदरचानी ७३२)	८८		

वार्षिक भूल्य ३. १) ट्रॉल भर्या आना ४.

आनंद श्रीनील ग्रेसमां शाह गुलामयं दललुबाध्ये छाप्यु—सावनभृ.

श्री आत्मानंद प्रकाशना मुंबधना आहोने नम्र सुचना,

पोष्टमेननी हडताव चालु डोवाथी लेटनी शुक वी० पी० थी भाष्ववामां आवेद नथी, जेथी तेतुं समाधान थये लेटनी शुक वी० पी० करी भाष्ववामां आवये जेथी भडेरभानी करी ते स्वीकारी वेशी।

सतरमा वर्षनी अपूर्व भेट

### “श्री हेवभक्तिमाणा प्रकरण”

आ आत्मानंद प्रकाशना आहोने सतरमा (गया) वर्षनी उपरोक्ता शुक भेट तरीके आपवामां आनी छे. मान साहित्यनो इवावो करवा, जेन अंधुओने वाचननो अडोला लाल आपवा सञ्च भोंधवारी छता जेम भासिक्तुं लवाज्जम वधार्हुं नथी, तेमज दृश्य इर्मनी लेटनी शुक आपवानो धारो छतां पवीय झारमना भेटनी शुक अगोज मान आपीये छीये, जे अमारा क्षदरदान आहोनी ध्यान बद्धार नथी. गया वर्षनुं लवाज्जम वसुव ईश्वा सहरङ्ग शुक वी० पी० करी अमारा सुरा आहोना उपर भोक्ती हती जेथी जे ने आहोने स्वीकारी लीपेक्ष छे तेमनो आआर मानवामां आवे छे अने आवा उत्तम अर्यांने उत्तम आपवा आत्म तेते आहार महाशय थीज नवा आहोना वधारी आपवा तेमज वाचननो अहोला लाल अन्य अंधुओने आपवा तेवो प्रयत्न करवो, एम नम्र सुचना करीये छीये.

हेटलाळ प्रभावि आहोने वगर नियारे वी० पी० पांडु भोक्तव्युं छे जेथी तेमवे नकासुं गेरटेज्ञुं तेमज गान आताने तुक्सान क्युं छे जेथी तेजो ते द्वी भंगावी लेशे एवी विनंति छ. उक्ता अंथनी सिलिक्मा अहु ज थेठी नक्लेवे छे, जेथी वडेला भोक्तुं लवाज्जम आपवुं पडो अने भेटनी शुक सीवीक्मा दरो तोज भग्नेवे; जेथी आठवी भोटी शुकने के मान ३. १००० डिमतनी छे तेनो ज्यक्षीयी लाल लेशो अने गानभाताना देवाभायी तेजो सुक्ता थये।

### ज्ञवन—सुधाराणुना सन्मार्गा।

प्रत्येक कुहुं अभां अवश्य राखवा अने वांचवा लायक अत्युत्तम लेखनो संग्रह

प्रथोज्ञक—विहुलदास मूर्णवंद शाह, वी. ए.

ज्ञवनमां नवीन उत्साह रेडनार, नवीन चैतन्य जगाडनार, अपूर्व आनंद अने शक्ति ग्रेनार तेमज भानसिक शक्तिओनो अन्नम विकास करनार उभदा सहविचारोयी भरपूर आमुस्तक प्रत्येक ओ पुरुषने स्वपरिकृत साधनामां अमृत्य साहाय्य आपनार थाई पडे तेम छे. आभा निहित करेला सन्मार्गी ज्ञाणी ज्ञवनयात्रा सङ्गी करवा जडर भंगावो. छिं. श. १५ भग्नवाना टेक्काशीः—

( १ ) श्री जैन आत्मानंद सभा—भावनभर.

( २ ) ज्ञवनलाल अमरदही भडेता

पीरमथाह रोड—अमदावाद.

॥

# આરમ્ભાનુદ્ધ પ્રકાશ

૩૭ ઇહ હિ રાગદ્વૈપનોદ્વારા જિ દૂતન સંસારિજન્તુના ૩૮  
 શારીરમાનસાનેકાતિકટુકછુઃસોધનિપત  
 દીમિતેન તદ્વયનયતાય દેયોપારેદ  
 પદાર્થપરિહાસે ઘતનો વિધેય : ॥ ૩૯

દુષ્ટના ૧૮ ] નીર રંગત ૪૪૦ આધીન લાગુ સંબત ૨૫. [ અંક ૩ જો.

## શ્રી જિનવર સ્તુતિ.

( ઉદ્દેશીત )

આનંદ લવિભેનાં હુદે ઉપભૂતાં ને સર્વદા,  
 નિઃ આત્મ-શુષ્ણ પ્રકટાવતા પ્રેમે પ્રગ્રહિ પર્વદા;  
 જાવની પીડાઓ જાવથી લવિજનતાલ્લી ને પરિહુર,  
 જીતારિ જીનવર તે જ્યાંતા જગતમાં જ્યાખ્ય ધરે.

## વ્યલિચાર નિંદા.

રચનાર—રા. રા. ખડગુણ.

(હંગીત.)

ધન જાય કીર્તિ જાય છે વળી કુળ કુલાંકિત થાય છે,  
અળ ક્ષીણ થાય અને વળી આચુણ્ય ઓાછું થાય છે;  
નિષા અરે ! વિનયાદિ સર્વે ધૂળધાળ્યી થાય છે,

વ્યલિચારીનો ઉત્કૃષ્ટ માનવ દેહ એળે જાય છે.

૧

પગલાં ન છુંછે વેર ડો ધિદુ સજજનો સુખથી કહે,

સતીજનતાણી દાદિ નિષે નિત્ય તેર તેના પર રહે;

વ્યલિચારીનું મુત્યુ ધણું કરી વગર મોતે થાય છે,  
વ્યલિચારીનો ઉત્કૃષ્ટ

૨

નિજ નાર રૂપ કાંડાર પણુ પરદારમાં આસુક્તા જે,

તે સૂક્તર સમ ત્યલુ અજ્ઞ મીઠું હૃષ વિષા ખાય છે;

તે જ્વાર થાયે સર્વથા પણુ ના હરામી છોડશે,  
વ્યલિચારીનો ઉત્કૃષ્ટ

૩

નિજ દાર મીઠું કુળ ત્યલુ જે પરદાર વિષકુળ ખાય છે,

દુઃખી થઈ અહીં તેહ અન્તે નરકમાંહી જાય છે;

દ્વારો ભૂક્ષિને પોછ જયારે હૈવ પ્રેરો પૂછશે,  
વ્યલિચારીનો ઉત્કૃષ્ટ

૪

પરદાર છે અંગાર તેને રતન હિંમતી ના ગણ્ણો,

ભરનાર પુષ્પની માળ તેને કાળસર્પ નહિ ગણ્ણો;

પરદાર નરકનું દ્વાર તે આપદ્વાતણું આગાર છે,  
વ્યલિચારીનો ઉત્કૃષ્ટ

૫

વ્યલિચારી પુત્રતણ્ણો પિતા અંગ્રિ વિનાજ બજ્યા કરે,

તે પુત્રની માતા ભિચારી લોકમાં શરમે ભરે;

દુર્બિક્ષમાંહી લતા પેઠ પત્ની સદ્દ સુધાય છે,  
વ્યલિચારીનો ઉત્કૃષ્ટ

૬

સત્કર્મ કરવા ધનિદ્રયો દેવે દીધી નરનારીને,

દુર્કર્મ કરશે તે થકી તો કયમ હૈવ નહિ ડાપશે ?

સત્કર્મ કરી સ્વર્ગ જશો તો સૌખ્ય પુણ્ય સહુ આપશે,  
વ્યલિચારીનો ઉત્કૃષ્ટ

૭

जैन तीर्थ लीभपह्नी अने रामसैन्य.

५८

## जैन तीर्थ लीभपह्नी अने रामसैन्य.

( सेप्टक—मुनि क्याण्विजयल. )

विहमनी चौहमी, पंडरमी अने सोलमी सहीमां दधायेला धधुआमेक अन्या अने शिवालेखोमां लीभपह्नी अने रामसैन्यनो तीर्थ तरीके अथवा प्राचीन नगर तरीके उत्तेष्ठ थयेलो जेवामां आवे छे. डेटलांक स्तोत्रो. अने चैत्य-परिवाहियोमां आ अने स्थगोने तीर्थ गणीने वंदन कर्यु छे. आ उपरथी ए वात तो निस्कर्षेहु छे के ‘लीभपह्नी’ अने ‘रामसैन्य’ डोर्ड माचीन जैन तीर्थ छे, पछु ते क्या देशमां आवेलां छे अने हालमां क्या नामथी ओलभाय छे ए वातानी डोर्डक्ने ज भपर हुयो.

### लीभपह्नी

लीभपह्नी नगर के जे एक वर्षत धधी प्रसिद्धिने पामेल हुतु, जेना नामथी ‘लीभपह्नीय’ नामनो गच्छ निष्ठयो हुतो अने जेनी प्राचीनता अने समुद्भाताने सूचवनारी हुलु पछु अनेके हंतकथाओ त्यांना निवासियोना मुख थझी ऐह अने गवानि पूर्वक सांकेतिये छियो ते आजे एक नहाना आमडाना इपमां ‘लीलटी’ ए नामथी ओलभाय छे.

लीलटी बाम पालण्यपुर एजन्सीमां डीसा-केम्पथी लगलाम आठ डाचने छेटे पश्चिमहियामां आवेलु छे. डीसा पासे आवेली अनास नहीने लीषे लोडेमां आना वर्तमान नामना संभांधमां एक एवी हंतकथा प्रचलित थयेली छे के श्रेष्ठिक राजा खेताना भापथी रीसाईने धरथी निष्ठणी परी परदेश थात्रा हरतो अगे आँयो हुतो अने एक लील कुमारीना प्रेममां इसी जर्ड तेष्ठीनी साचे पर-धुवाने तेयार थयो हुतो, पछु पाछलथी तेने जधायुं के लीलटीनी लेड परधुने चेते एक अयोध्य काम हरनारो अखायो. आ विचारथी तेषु परधुवानुं भांडी वाहयुं, पछु हुद्यमां हुगेला प्रेमनी जडने तोडी शक्यो नहिं. छेवटे खेताना प्रेमने जुतनारी लीलटीनो प्रसंग चिरस्मरणीय राखवाना विचारथी ते नअरने-के जे ते पहेलां ‘बंधावती’ ना नामथी ओलभातुं हुतु-‘लीलटी’ एवुं नाम अपावीने त्यांशी विद्याय थयो।

१ श्रेष्ठिक चरितमां एवी हुकीकत आवे छे के धरथी निष्ठीने मुसाइरना वेदमां इरतो हरतो श्रेष्ठिक घेज्ञाताए नगरमां गयो हुतो. विशेष संभन छे के आ हुकीकत उपरथी ज अनास नहीनी पासे आवेला लीभपह्नी नगरनी साचे श्रेष्ठिकना संभांध वाणी हंतकथा धडाई हुयो.

उपर्युक्ता हंतकथा ईतिहासनी लाए डेइ पछु जातने संभव राखती होय अम अन्नादृं सहनुं नरी, वास्तवर्ष मां ज्ञान एक नगरे अने तीर्थीना संभवमां ने अकारी हंतकथामो अन्म पामे छे तेज प्रकारनी आ एक छे, आनी अद्वितमां कंध पछु उपर्योगिता होय तो ते ऐटली जे के लीभपहीनी प्राचीनता सूचनादृं ते एक आडकतदृं प्रभाषु छे.

लीभपहीने प्राचीन ईतिहास क्यांध जेवामां आवतो नथी अने तेथी तेनी प्राचीन हकीकत ज्ञानवालुं कठिन थर्ह पडे छे, अमो कही नथी शकता डे लीभपहीनी रवापना क्यारे थर्ह ? तेनी ज्ञानवाली क्यां सुधी रही ? अने तेनी अनिद दशा क्यारथी बेठी ? दोडा क्छे छे के लीलाडी गोक समृद्ध नगर हतुं, पछु अकाल ढालोपने लीषे ते अशिर्णी अणीने असभीभूत थर्ह गयुं, सुभाष्ये नगरनिवासियोने आ अकाल घटनानी अगर डेइ एक सुनिष्टे प्रथमथीज ज्ञानी हीधी हती तेथी लेडो धबु आगे ज्ञानमाल ज्ञानी शक्या हुता, दोडा अम पछु क्छे छे के से निमित्तरा साकुनी हुपार्थी नगरनिवासियो गोताना प्रियनगरनो त्याग करीने थबु उंशी हँर अद्वाने एक नवुं नगर वस्तानीने रह्या ने नगर आने राधन-पुरना नामथी ओवधाय छे, त्यार पछी निश्चित दिवसे लीलाडी नगर बदीने राख थयु, आ कथननी सत्यताना विश्वमां अवुं प्रभाषु अपाय छे के लीलाडीमां ज्ञाना वस्तानुं एक हेवीनुं भाद्रि छे, आ हेवी राधनपुरना धबुंक कुणोनी कुलहेवी छे अने हुलु पछु लाज विशेषता असजोन्ये राधनपुरी दोडा अ हेवीने आस जुहारवा आने छे, असेती लीभपहीना दोडाडी राधनपुर वस्तानी हकीकत सत्य हरै छे.

आम अणी ज्ञानी सत्यता लेडो ऐटला उपर्युक्ती आने छे के हुलु पछु आ-मां के तेनी आसपास आटां ने रवु द्वाना डंडामांची राखनो धर निको छे अने डेटलीक अणेती ईभादनो पछु निको छे,

उपरनी हंत कथामां सत्यांश ३२वो होतो ते अताव तानी विशेष येषा नहिं करतां अमो ऐट्हुं जे कहिशुं के उपरनी हंतकथा डेवण निराधार नथी पछु, डेइक खरी घटना उपर्युक्ती ज्ञनभेती हुए ईतिहासिक सत्यता दाखवनारी छे, आ ईति-हासिक सत्यनी जांधी डरवनारी, उट्टेख पंद्रहमी सदीना ग्रैट विद्वान आचार्य अनिसुंदरसूरिनी गुर्वावलीभाषी पछु भगी आवे छे ने नीये प्रभाषु छे—

“ श्रुतातिशायी पुरि भीम पृथ्यां वर्षसु चाद्येपि हि कार्तिकेऽसौ ।

अगात् प्रतिक्रम्य विबुद्ध्य भावि भङ्गं परैगदश सूर्यबुद्धम् ॥ ६३ ॥ ”

गुर्वावली पृ. ११

## जैन तीर्थ सीमपट्टी अने रामकैन्य.

७१

**भावार्थ—**‘अतिशयवत् श्रुति सानना धारक ते( आचार्य धर्मविद्यापना शिष्य श्रीसोमप्रलससूरि) लीभपट्टी नगरीमां चैमासुं रह्या. आ आतुर्मीसमां ऐ कार्तिक मास छता तेथी शासना नियम प्रभाषे वीज कार्तिक सुहिमां चैमासी प्रतिष्ठ-मधु करीने चैमासुं समाप्त हरवत्तुं हतुं, पशु लग्न कुंडलीमां बारमा लुवनमां पंडेला सूर्यपरथी तेच्यो ज्ञायुं के शेजाज व्यभतमां आ नगरनो लंग थवानो छे. आथी तेच्यो प्रथम कार्तिकमां ज चैमासी प्रतिकमधु करीने त्यांशी विहार करी गया.

आ उपरथी एट्टुं तो चिद्ध थाय छे के डॉइषषु अकस्मातथी लीभपट्टी नो नाश थयो हतो. अने दंतकथा प्रभाषे ते अनिश्चीय थयो लेय तो असंभवित नथी.

**गुर्वावलीना** पूर्वोक्त पथ उपरथी यो वात पशु स्पष्ट थाय छे के लीभपट्टी नी पडती आचार्य सोमप्रलसना नभतमां थर्ह हती, सोमप्रलससूरि तपगच्छीय आचार्य श्री धर्मविद्यापनारिना पद्मधर हता अने तेमनो साधुत्वकाव गुर्वावलीमां ज-णाव्या प्रभाषे १३२१थी १३७३ सुधीनो हतो<sup>१</sup> एट्ट्वे चैदभी सहीना लगभग मध्य लागमां लीभपट्टीनो नाश थयो हयो. लीभपट्टीना प्राचीन अडेरा, तेमांथी निउणती छटो अने वीज पठार्यो उपरथी येम ज्ञाय छे के बारमी अने तेरभी सहीमां लीभपट्टी नगरी संपूर्ण लडेजवाली भोगवती हती.

**लीभपट्टीमां** धर्षी एक झडाई तेम ज नहानी पावाणुनी प्राचीन जिन-प्रतिभाओ छे, पशु डॉङना उपर देख जेवामां आवतो नथी, आ उपरथी सहेले अतुभान थर्ह याडे के आ प्रतिभाओने धर्षी लाग अग्न्यारभी अथवा बारमी सहीनो हेवा जेइयो, ज्यादे ते प्रतिभाउपर देख लाभवानी पद्मनि लगभग नहिं जेवी हती. उट्टवाक छुटा छवाया देखो त्यां हेखाय छे अना, पशु ते अर्वाचीन समयना छे. हातमां त्यां भणता देखोमां लुनामां लुनो सां १२१५नी सावनो एक धातुनी प्रतिभानो देख छे, पशु आ प्रतिभालीभीमां प्रतिष्ठित थवानी खातरी मणी थडे तेम नथी. त्यांना देखोमां लावाचीनामां लागाचीन १३५८ नी सावनो एक देवतानी भूर्तिनो देख छे, त्यारभी बाहारमी सही सुधीमां लभायेत एक पशु देख जेवातो नथी. आ उपरथी येम मानवाने छारघु मगे छे के चैदभी सहीना मध्य लाग सुधी तो लीभपट्टीमां धार्भिक्ति पृष्ठति थया करती हती, पशु त्यार पशी लीभपट्टी सहानी शांत निद्रामां सूतेली लागे छे. आ पूर्णी डेक पांचसो वर्ष पठीलीभीभपट्टी-हालतुं लीखडी-गाम कुंडक उलझगर दशामां आज्युं लेय येम ते गाममां सां १८८२ भां धयेदी नेभिनाथनी प्रतिष्ठा उपरथी ज्ञाय छे.

१ “ दिग्विश्ववर्षे १३१० जननं कुपाणि—विश्वे १३२१ ब्रतं प्राप्य रट्टिचंद्रे १३३२ ।

पदप्रतिष्ठां च गुरुर्जगाम त्रिसप्तविश्वं च स देवधाम ॥ ६६ ॥—गुर्वावली पृष्ठ ६१.

### વર્તમાન હશે॥

પૂર્વો કણું તેમ વર્તમાનમાં લીભપદ્ધતી એક નહના ગામઠાના ઇપમાં ભીલઠીના નામે ઓળખાય છે. લીલઠીની દ્વારા ખરે જ લીલઠીના જેવી છે. ડેટલીક અન્ય વસ્તુની સાથે માત્ર પાંચ સાત ધર આવકોનાં છે અને તે પણ સાધારણ સ્થિતિનાં. ગામમાં ધર્મશાળાની અંદર શ્રી નેમિનાથનું હેહરાસર છે જેની પ્રતિષ્ઠા સં. ૧૮૬૨ની સાલમાં તપગણ્ધના શ્રી પૂજયના હાથે થયેલી છે.

પશ્ચિમ તરફ ગામને છેડ એક વિશ્વાલ ધર્મશાલા અને લોંઘરાવાળું એક મંદિર આવેલ છે. મંદિર નવીન છે, પણ તેની નીચેનું લોંઘડું અસલના વખતનું છે. તીર્થનાયક પાર્થનાથ જે 'લીલઠિયા પાર્થનાથ' ના નામથી પ્રખ્યાત છે. તે આજ લોંઘરામાં મૂલનાયકને સ્થાને બિરાજે છે. આનુભાનુમાં નેમિનાથ વિગેરની ડેટલીક મૂર્તિઓ છે જે લગભગ સર્વો લેખ વગરની છે. મૂળનાયકને સમસુખ પૂર્વ તરફ એક ગૌતમ સ્વામિની મૂર્તિ છે જેની પ્રતિષ્ઠા જિનપ્રથોધ સૂરિએ કર્યાનો હોય છે.

લીલઠિયા પાર્થનાથની આનુભાનુના ગામ નગરોમાં સારી પ્રખ્યાતિ છે. પ્રતિવર્ષ પૈષ દ્વારાને હિંસે ત્યાં ચેણો ભરાય છે જેમાં કેચ્ચ, ડીસા, પાઠલું વિગેરથી હળવો યાત્રાણુંઓ એકન થાય છે. આ તીર્થનો વહીવટ ડીસા-દાઉનનો સંધ કરે છે. ડીસાના સંધની દેખરેખ નીચે આવ્યા પછી આ તીર્થ સારી સ્થિતિમાં ભૂક્ષાણું છે. આ વાત જણ્ણાવતાં અમને આનંદ થાય છે. છેવટે લાવિક જૈમાને આ તીર્થની યાત્રા કરવાની લાલામણુ કર્યે છીયે.

### રામ સૈન્ય.

લીભપદ્ધતીથી ઉત્તર દિશામાં બાર ડોશ અને ડીસા-કેચ્ચપથી વાયંય ક્રાણુમાં દ્વારાને છેટે પ્રાચીન કૈન તીર્થ 'રામસૈન્ય' આવેલું છે, જે હાલમાં 'રામસૈણુ' ના નામથી ઓળખાય છે.

રામસૈન્યની પ્રાચીનતા અને જાહેજલાલીને જણ્ણાવનારા શિલાલેખો મૂળી આવે છે. ગુર્વાવલીઓ અને ચૈત્યપરિવાહિયા પણ આની પ્રાચીનતા અને તીર્થ તરીકેની જ્યાતિ આપણુંને જણ્ણાવે છે.

આચાર્ય સુનિસુંદરસૂરિ પોતાની ગુર્વાવલીમાં લખે છે કે 'આચાર્ય સ્વર્વહેવ સ્થુરિએ વિહુમ સં. ૧૦૧૦ ની સાલમાં રામસૈન્ય નામક નગરના ઇથલહેવના મંદિરમાં આઠમા તીર્થંકર શ્રીચંદ્રપ્રભના જિંબની વિધિપૂર્વક પ્રતિષ્ઠા કરી' આ અર્થને જણ્ણાવતાં ગુર્વાવલીનું પદ નીચે પ્રમાણે છે—

કેન તીર્થ લીમપદ્મી અને રામસૈન્ય.

૭૩

“ નૃપાહશાગ્રે શરવાં સહસ્રે યો રામસૈન્યાદ્વારે ચકાર ।  
નામેયચૈત્યેષ્ટપતીર્થરાજ-વિમ્બપતિષ્ઠાં વિધિવત् સદ્ચર્યઃ ॥ ૧૭ ॥ ”

ગુર્વાવલી પૃ. ૧૪

આ ઉપરથી જાણુશે કે એક હળવ અને દર્શાની સાલમાં ચંદ્રપ્રળની પ્રતિષ્ઠા થઈ તે પહેલાંતું ત્યાં કુષભદેવતું મંદિર પ્રતિષ્ઠિત હતું.

રામસૈન્યમાં એક પ્રાચીન સમયનો ધાતુનો પરિકર નિકલેલ છે. તે પરિકર ઉપર વિકલ સંં ૧૦૮૪ ની સાલનો આર્યા છંદમાં રચેલો લેખ છે. લેખનો કેટલોક ભાગ ધસાઈ જવાથી સ્પષ્ટ વંચાતો નથી, પણ જેટલો વંચાય છે તેનો અર્થ નીચે પ્રમાણે થાય છે.

‘ વર્ત્માન શાસનના નાયક ભગવાન् વર્ધ્માન સ્વામિની શિષ્ય પરંપરામાં વજુ નામના આચાર્ય થયા કે જે વજની ઉપમાને ધારણું કરનાર હતા. ॥ ૧ ॥

તેની શાખામાં (વજી શાખામાં).....<sup>૧</sup> ચંદ્રકુલીન મહામહિમાવંત વટેશ્વર નામના આચાર્ય થયા ॥ ૨ ॥

તે વટેશ્વરથી થારાપદ્ર નગરના નામથી ‘ થારાપદ્ર ’ નામક ગંધી ઉત્પન્ન થયો. જે સર્વ દિશાઓમાં અયાતિ પાંચો છે અને જેણે પોતાના નિર્મલ યથ વહે સર્વ દિશાઓને ઉન્નવલ કરી દીધી છે ॥ ૩ ॥

તે ગંધીમાં ધણુઅંક વિક્ષાન આચાર્યો ઉત્પન્ન થઈ હેઠળત થયા પછી જીયે-ધાર્ય નામના આચાર્ય જ્યા. જીયેધાર્ય પછી શાંતિભદ્ર, શાંતિભદ્ર પછી સિદ્ધાંત મહોદધિ સર્વદૈવ સૂરિ અને સર્વદૈવની પછી શાલિભદ્રસૂરિ થયા ॥ ૪ ॥

આ પછીનો છુટી આયો અને સાતમો અનુષ્ટુપ એ એ પદો અરાધર વંચાતાં નથી. છુટી આચાર્યનો પ્રથમનો “ શ્રી શાંતિભદ્રસૂરી વ્રતપતિ ” આટલો ભાગ સ્પષ્ટ વંચાય છે. ત્યાર પછી બીજા પાદમાં “ પૂર્ણાલદ્ર ” ત્રીજા પાદમાં “ રઘુસેન ” એ નામો વંચાય છે. સાતમાં કોણની આહિનાં પણ અસ્ત્રો વંચાતાં નથી, આકીનો કોણો નીચે પ્રમાણે વંચાય છે—

“.....યદિદं વિંબ નામિસુનોર્મહાત્મનઃ ।

લક્ષ્મ્યાશ્રુચક્તાં જ્ઞાત્વા જીવિતન્ય વિશેષતઃ ॥ ”

૧ મૂલ લેખમાં આ સ્થલે “ સ્થાનીયકુલોદ્ભૂતો ” આવું કંઈક વંચાય છે, પણ વટેશ્વરને માટે “ ચન્દ્રકુલોદ્ભૂત ” વિશેપણ બુદ્ધ લખેલ હેઠાથી “ સ્થાનીયકુલોદ્ભૂત ” એ વિશેપણ ફેને બાગુ પાડતું તે ગુંચવણું ભરેલું છે. આની નેતૃ જે “ મહામહિમા ” શંદ ભૂલો છે, પણ તે “ સ્થાનીયકુલોદ્ભૂત ” તું વિશેષ માનવાને કંઈક પણ આધાર નથી. વિચારક નર્મને આ સ્થળ લક્ષ્મ્યપૂર્વક જોવાની બસામણું કરીયે છીએ.

छेषटे “अंगलं महाश्रीः ॥ संक्षत १०८४ वैत्यमैर्जनस्याम् ॥” आठवें गधनो इडरो लभी लेखनी समाप्ति जब्लावो छे. अब्ला भाडित बो पधोना अर्थात् पूर्वना साथे अनुसंधान करतां ऐसुं तात्पर्य समजाय छे के उपर जब्लावेल आयार्थ शांतिसद्ग्रना समयमां सं० १०८४ ना चैत्र शुद्ध १५ पूर्णिमाने दिवसे पूर्ण्य-बद्रसूरिए लगवान् श्री ऋषभहेवना भिंवनी प्रतिष्ठा करी. छठी आयोना नीज पादमां के “रघुसेन” नाम बनाव उते प्रतिष्ठा उत्तरवनार वृहस्थलुं लागे छे, अने ते वृहस्थ रामसैन्यनो राजा लोकाली संवादवा थाय छे, कारणु के उपर जब्लावेवा वर्षमां ४ प्रतिष्ठित थयेली एक धातुनी उली प्रतिभाना लेखमां “रघुसेनीयराज्ये” आवो उल्केख लेवामां लागे छ.

गुरुविवदीकार १०१० ना वर्षालां ऋषभहेवना चैत्यमां चंद्रप्रसनी प्रतिष्ठा थयातुं जब्लावे छे, त्यारे उपरुडेत सामसैन्यनो देख १०८४ मां ऋषभहेवनी प्रतिष्ठा थयानी हुडीकित अकट करे छे. अस उपरुडी जन्मे लेजेन्टा परस्पर विरोध भानी लेवातुं साहस करवुं लेइए नहि, करणु के धातुना परिकरने लेख अने तेज वर्षाना लेखवाली कायोलालगी सिंहत धातु-प्रतिभा निम सूचवे छे के सं० १०८४ना वर्षमां प्रतिष्ठित थयेली ऋषभहेवनी प्रतिभा धातुनी लालो लेइये अने ते प्रभाषुमां अशतगढना जिनमांहिरमां छेउली प्रतिभा रेवती झाटी.

मुनिसुंदरसूरि जे ऋषभहेवना चैत्यनो उल्केख करे छे ते आ प्रतिभावालुं नहिं, पछु आथी प्राचीन भीजुं पावालुनी प्रतिभावालुं समज्ञवुं लेइये अने ते धर्षुं करीने हातवुं लोयदुं अथवा तोरे लगतु गद्दिर हुशो अने हातमां लोयरामां शांतिप्रकटावती चार जिन प्रतिभासानी ओइ एक प्रतिभा ऋषभहेवनी हाइ पूर्वे तेना भूल नायकना स्थाने भीराजती हुरो.

आ बधुं जेतां एटलुं तो चोक्स थाय छे के सामसैन्य एक प्राचीन तीर्थ छे. विहमनी अग्यादभी सहीमां त्यां प्रलावह आग्यार्थीना हाथे अनेक प्रतिष्ठाओ थष्ट हुती. ते वर्षत तो सामसैन्यनो राजा ‘रघुसेन’ चोते लेन लाइ तीर्थकरो ना मांहिरो अने प्रतिभानी स्थापना उत्तरांगो छुतो. आवी रीते राज्याश्रयने पाभीने अग्यादभी सहीतुं सामसैन्य धार्मिक उत्तरिनी गोन्ये पहोच्युं हुतु. ५७ पछु ज्यां त्यां जोहडाम करतां प्राचीन प्रतिभालो, हम्भारतोनां खडेरो, मांहिरोना पत्थरो, कुवा वावडियोना देखावो अने सिङ्का विगेरे प्राचीन उत्तरिनां समारडो धर्षी अन्यथी वर्ष्ये प्रगट थष्ट हेखनारना हुद्दयने आकर्षे छे अने साथे ४ नगर-सनी पूर्वकालीन समृद्धिनी साथे अजनी कंगालित हशानो सुकाभद्रो करावी नज्ञहुद्दी भानवना हुद्दयने पछु पिंगलानी गे आंसु भरावे छे.

## બૈન તીર્થ લીમપદ્મી અને રામસૈન્ય.

૭૫

### વર્તમાન સ્થિતિ.

આપણે ઉપરની હકીકતથી જાણી શક્યા કે આજનું રામસૈણુ ગામ એક સમગ્ર સમૃદ્ધિસ્થાલિ ‘રામસૈન્યનગર’ હતું, પણ હુલમાં એની ડેવી સ્થિતિ છે તે પણ જણાવવાની જરૂર છે.

શુજરાત અને માસ્વાહની સીમા ઉપર આવેલા આ ગામમાં આને ડેટ્લીક અન્ય વસ્તિની સાથે પંદર ધર આવડોનાં બાકી રહ્યાં છે.

રામસૈણુ એક વાધેલા રાજ્યપૂર્ત ડાકોરના તાણાનું ગામ છે કે જે ડાકોરની પ્રથાંસાનું આ સ્થળ ન હોવા છતાં પણ એટલું કહેવું પડે છે કે તે બલા ડાકોરના જેવા જાગીરહારો વિશ્વાજ હશે અને જિન મંહિરની તરફની તેની લાગણી ધરાવનારા તો ભાગ્યે ડોઢ ખોલ્યા મળશે.

પચિંદ તરફ ગામને છેડે ધણ્યાજ જુના વખતનું એક લોંઘિંદે અને તેમાં અખાંડિત લગભગ ત્રણું પ્રીટના પ્રમાણવાલી પાપાણુની સુંદર ચાર જિનપ્રતિમાઓ છે. આ પ્રતિમાઓ ધાર્યાજ આચીન છે. લાંછનો એવાલાંનાં નથી તેથી તે ક્યા ક્યા ભગવાન્ની છે તે કહેવું સુશકેલ છે. પ્રચલિત પરીક્ષા પ્રમાણે પ્રાચીનતાનાં ચિનંદા જોતાં તે સંપ્રતિરાજના વખતની છે એમ કહેવામાં કંઈ વાધ્યો નથી, પણ અમે આ પરીક્ષા ખરી હોવાનો હાવો કરતા નથી, તેથી એટલું જ કહી શકીયે કે હુલમાં પ્રતિમાઓ સંપ્રતિરાજના વખતની ન હોય તો પણ તે અગ્યારમી સહી પઢીની તો નથી જ.

ડેટ્લાક વર્ષો પહેલાં એક ધાર્તુની કાચેત્સર્ગ સ્થિત ઝેણાટી પ્રતિમા ડોર્ઝના ઐત્રમાંથી નિકળેલી, પણ ડાકોરજીની મૂર્તિ જાણી આવડોએ લીધી નહિં તેથી રામાના મંહિરમાં પદ્ધરાવવામાં આવી. આ પ્રતિમાને અમોદે નજરે જોયા પછી જિનપ્રતિમા હોવાનું જણાવી જૈન લોંઘરામાં પદ્ધરાવવાનો બંદોબસ્ત કરાયો હતો.

એ સ્ક્રિવાય એક અંભિકાની ઝેણાટી સુંદર મૂર્તિ, ડેટ્લીક ધાર્તુની જિનપ્રતિમાઓ અને મંગલશહુ વિગેરનાં ડેટ્લાક ત્રાંખાનાં ચેત્રો પણ લોંઘરામાં જોનારનું ધ્યાન એંચે છે. આ સર્વ ચીને જુદા જુદા અવસરે જમીનમાંથી નિકળેલી અને લોંઘરામાં પદ્ધરાવેલી છે.

ત્યાંના લોડાનો એવો દશ વિશ્વાસ છે કે જિનમંહિરની પત્થર સુદ્ધાં ડોઢ પણ ચીજ ધરના કામમાં વાપરવાથી વાપરનારને તત્કાલ તુકસાન પહોંચે છે. આ વિશ્વાસના અશાપણ વિષેનાં અનેક દસ્તાતો ત્યાંના નિવાસિયોની જાણ પર નાચી રહ્યાં છે, જેમાંના એક એનો અત્ર ઉલ્લેખ કરવો વાંચડોના વિનોહનું કારણ થઈ પડ્યો.

કહે છે કે એક રહેણો પ્રાચીન જૈનમંહિરનો પથર ગામ બહાર રખડતો પછ્યો હતો, તેને લઈને એક કુવાવાળાએ ન્હાવા ધેવાને વાસ્તે પોતાના કુવા ઉપર મર્કી લીધ્યો, આનું પરિણામ એ આંધું કે એકજ દિવસમાં ઝૂચો ઢ્વીને સમેં તમે થઈ ગયો, આથી ડેરાન થઈ લોડોએ તે પથરને ત્યાંથી ફર કહાડી નાખ્યો.

તે જ પથરને કાલાંતરે કોઈ બીજું કુવાવાલો પોતાના કુવા ઉપર લઈ ગયો અને તેના પણ કુવાની તેવીજ દ્વારા થઈ જેવી પહેલાની થઈ હતી.

એકવાર ત્યાંના ડાકોરે જૈનમંહિરની રખડતી એક શિવા પોતાના મકાનના ઓટલા ઉપર ખીડાવી, પણ રત્ને એવો કોઈ અગન્ધ્યયમતકાર તેના જોવામાં આંધો કે બીજે દિવસે ઓટલો જોદાવીને તે શિવા કહાડી નાખવી પડી.

એક વખત દેહરાના ડાકોટાની બહાર ડાકોટાની જરીનમાં ઉલ્લેખું નિંખડાનું વૃક્ષ પવનના અપાયથી ઉખીને મંહિરના કંપાઉંડમાં જઈ પહુંચ. આ વૃક્ષ પોતાના તાખાની જરીનમાંનું હાવાથી ડાકોર સાહેબો પોતાના કંગળમાં લેપ લીધું, પણ દૈવચાથી તેમને કોઈ અખય લય લાગ્યો કે કાંધું કપાંધું તે આડ ડાકોરે પાછું દેરાસરમાં મોકલાવી લીધું. ઈત્યાદિ અનેક ચયમતકારિક વાતો રામસોણુના લોડોના મુખ્યથી સંભળાય છે. આ ચયમતકારોની સત્યતા વિષે વિવેચન કરવાનું આ સ્થળ નથી, પણ આ ચયમતકારોનું જે પરિણામ આવતું જોઇયે તે સંપૂર્ણ રીતે આંધું છે. ગામની સર્વ પ્રજાનો જ્ઞિનમંહિર પ્રત્યે અભિનાવ પ્રત્યક્ષ જોવાય છે. ગામના ડાકોર સાહેબની પણ આ દેહરા તરફ ધણી સહાનુભૂતિ છે. અને કોઈ જીવોંકાર કરવનાર હોય તો તે માટે જોઇયે તેટલી જરીન મહિત આપવાનું ચોતે જણ્ણાવે છે. હું જ્યારે ત્યાં હતો ત્યારે પહેલે જ દિવસે એક સુસલમાન ઠોકારે આવીને દેહરાની બરાબર સાર સંભળ રાખવાના માટે શાવડોને ઉપરેશ કરવાની રહુને ભલામણું કરી હતી. આ દાખલાએ ઉપરથી રામસોણુના લોડાની જૈન મંહિર પ્રત્યેની પૂજા-અંદરું માન થઈ શકે તેમ છે.

હાલમાં જે લોંઘરામાં પ્રતિભા છે તે જીબું થયેલું હોઈ સુધરાવવા ચોગ્ય છે. લોંઘરા ઉપર નહાનું ચિખરણંધ હેહડં બંધાવવાનું કાંક શૈડા વર્ષ પહેલાં આમના શાવડોએ શરૂ કરાંધું હતું જે એ હન્દાર જેટલી રકમ ખર્ચાયા પછી દ્વારા અભાવે બંધ પડ્યું છે.

લોંઘરાની આજુભાજુ જુના વખતનો ડાટ છે જે કેટલેક ઠેકાણું-મુખ્યતયા ફક્ષણ તરફનો—પડીને જરીન દોસ્ત થયો છે અને તે ડેકાણું હાલમાં કાંટાની વાડ કરવામાં આવી છે.

લોંઘરાની ભરામત, અપૂર્ણ શીખરની પૂર્ણતા અને નદા ડાટને માટે હાત તરત ઓછામાં ઓછી હસ હન્દાર રૂપીયાની જરૂર છે.

લોંઘરાની ભરામત, અપૂર્ણ શીખરની પૂર્ણતા અને નદા ડાટને માટે હાત તરત ઓછામાં ઓછી હસ હન્દાર રૂપીયાની જરૂર છે.

## જૈન તીર્થ ભીમપદ્મી અને રામસૈન્ય.

૭૭

આની ઉપરોગીતાનો ઉપરોક્ત કરતાં તે વેળાએ ડીસા-કેર્પના સંવે આ કામ ઉપાડી કેવાની હિમત હેખાડી હતી અને તે માટે ટીપ પણ શરૂ કરી હીધી હતી, જેમાં કેર્પ અને રાજ્યપુર વિગેરેની ભાગી લગભગ ઇ. ૨૦૦૦) ની રકમ તેજ વખતે લખાઈ ગઈ હતી અને શેડ આણુંદળ કલ્યાણુંલની પેઢી તરફથી ચોખ્ય મહદ મળતાં કાર્ય શરૂ કરવાનો વિચાર રાજ્યો હતો. આ માટે ડીસા કેર્પના સંધનું એક ઉપ્યુટેશન આણુંદળ કલ્યાણુંલની પેઢીની સુલાકાતે ગયું અને ચોખ્ય મહદની માગણી કરી, પણ પેઢી તરફથી ઉત્તર મળ્યો કે આવતી જનરલ મિટિંગમાં આનો વિચાર થશે. એવટે જનરલ મીટિંગ થઈ અને બીજુ પણ કેટલીયે મીટિંગા ભરાઈ ગઈ; પણ સાડા ગણું વર્ષ સુધી ડીસા-કેર્પના સંધની માગણીનો કંધું પણ ઉત્તર મળ્યો નહિં. આ અમાણું મહદના આલાવે અને કાર્ય ઉપાડનાર સંધના પ્રમાદના પરિણામે રામસૈન્ય તીર્થના લણ્ણોડારનું કાર્ય રખાડ્યું.

હવણાં રહારા જાણુવામાં આવ્યું છે કે રામસૈણું ના લણ્ણોડાર માટે એક હબલરની રકમ આપવાનો ઉક્ત પેઢીએ નિર્ણય કર્યો છે અને તે રકમ લેઈ જવા માટે ડીસા-કેર્પના સંધને પેઢી તરફથી હાલમાંજ અખર અપાઈ છે.

આ પ્રસ્તુતે રહારે ડીસા-કેર્પના સંધને ઉદ્દેશીને એ બોલ કહેવાની જરૂર જણાય છે કે તેણે કે ઉત્સાહથી આ તીર્થના ઉદ્ઘારનું કામ માથે લીધું હતું તેજ ઉત્સાહથી હવે શરૂ કરી દેવું જોઈએ. એ કહેવાની જરૂર નથી કે આ કામને માટે હજુ છ સાત હબલરની જરૂર છે, પણ મહેને વિશ્વાસાં કે આ કામને માટે ઉક્ત સંધ જે થાડી પણ મહેનત કરશે તો તેટલી રકમ વગર ભુષકેલીએ મેળાની શકશે.

શેડ આણુંદળ કલ્યાણુંલની પેઢીને પણ મહારી નમ લલામણું છે કે જે આ કાર્યને માટે ડીસા કેર્પનો સંધ પોતાની અશક્તિ જ ખતાવે તો તાકીદ આ કામ પેઢીએ પોતાના હાથમાં લઈ નામ શોષ થતા પ્રાચીન જૈન તીર્થનો ઉદ્ઘાર કરી પોતાની ફરજ અદા કરવી જોઈએ.

ભીમપદ્મી અને રામસૈન્ય તીર્થના સંખાંધમાં જુનો અને નવો જે કંઈ છતિહાસ અમારા જાણુવામાં હતો. તે સંક્ષેપમાં ઉપર જણાવી હીધો છે. આશા છે કે નવીન મંહિર કરાવવા કરતાં લણ્ણોનો ઉદ્ઘાર કરવામાં આઈ ગણું ક્ષલ ભતાવનાર અને માનનાર વેશળી અને વૃહુસ્થ વાયકો ઉપર્યુક્ત બન્ને તીર્થને વિષે પણ તે ઉપરોક્ત વાણું પાડશે. તથારસ્તુ.

**રામપુરા. ( અકેઢા )**

તા. ૧૧-૮-૧૯૨૦

**મુનિ કલ્યાણુવિજય.**

પરિજ્ઞાણ અ.

### ભીમપણીય ગચ્છ સંબંધી લેખો<sup>1</sup>

૧ સં ૧૫૦૬ વર્ષે વૈશાખ શુ. ૧૨ ગુરૂ ગુર્જર જ્ઞાં દો ૦ ગોપાળ ભા ૦  
સાઈ પિતૃમાતૃશ્રેયસે સુત ધર્મસાયરાન્યાં શ્રીશિતલનાથવિર્બં કા ૦ શ્રીપૂર્ણિમાપક્ષે  
ભીમપણીય ભ ૦ શ્રીજયચંદ્રસૂરીણામુપદેશોન પ્ર ૦ ॥

૨ સં ૧૫૦૭ વર્ષે વૈશાખ શુદ્ધ ૧૦ તુધે શ્રીશ્રીમાલ જ્ઞાતીય વ્ય ૦ સોમ  
ભા ૦ ગુહ્વદે પુત્ર સુરા ભા ૦ સુહાગદે પિતૃમાતૃશ્રેયસે સુ ૦ પાંચાકેતન શ્રીસંભવ-  
મુખ્ય પંચતીર્થી કા ૦ પૂર્ણિમાપક્ષે શ્રીભીમપણીય શ્રીપાસચંદ્રસૂરિપદ્દે ભ ૦ શ્રીજય-  
ચંદ્રસૂરીણામુપદેશોન પ્ર ૦ વિધિના ॥

૩ સં ૧૫૩૬ વર્ષે માહવદિ ૭ સોમે શ્રીશ્રીમાલજ્ઞાતીય મં ૦ માદળ ભા ૦  
માલહણદે સુત મં ૦ ભાષર ભા ૦ કરમી પિત્રો: શ્રેયસે પુત્ર મં ૦ દેવસીકેતન શ્રીવિ-  
મલનાથવિર્બં કા ૦ શ્રીપૂર્ણિમાગંઢે ભીમપણીય ભ ૦ શ્રીભાવચંદ્રસૂરિપદ્દે ભ ૦ શ્રી  
ચારિત્રચંદ્રસૂરીણામુપદેશોન પ્રતિ પાડલા પ્રામબાસ્તવ્ય ॥

૪ સં ૧૫૭૮ વર્ષે માઘવદિ ૯ સોમે શ્રીશ્રીમાલ જ્ઞાં ૦ મં ૦ નારદ ભા ૦  
રંગી પુ ૦ મં ૦ વરજાંગેન ભા ૦ જીવુ પુ ૦ મં ૦ કાન્દ મં ૦ મેઘરાજાદિસમસ્ત  
કુદુંબયુતેન કાકરવાસ્તવ્યા ધર્મભગિની શ્રાં ૦ માંજૂશ્રેયસે શ્રીવિમલનાથવિર્બં કા ૦  
શ્રીપૂર્ણિમાપક્ષે ભીમપણીય ભ ૦ શ્રીચારિત્રચંદ્રસૂરિપદ્દે ભ ૦ શ્રીમુનિચંદ્રસૂરીણામુપ-  
પદેશોન પ્ર ૦ પત્તનવા ૦ ॥

૫ સ્વસ્તિશ્રી: । સંવત् ૧૫૯૮ વર્ષે પૌષવદિ ૧ સોમે શ્રીઉકેશવંશે વ્યવ્ય ૦  
પરવત ભા ૦ ફદ્કૂ સત્પુત્ર વ્ય ૦ જયતા ભા ૦ અહિવદે પુ ૦ વ્ય ૦ શ્રીપાલપરિ-  
વારેણ સો (સ્વો) કંવિતેન કર્મનિર્જરાર્થે સ્વાપ્તપરિવારશ્રેયોર્થે શ્રીપાર્બત્નાથવિર્બં કા ૦

૧ આ લેખામાં હેઠળ 'લીમપણીય' શબ્દનો જ ઉલ્લેખ છે. 'ગંગા' શબ્દ લખવામાં અનુભૂતિ નથી, ગંગા તરીકે 'પૂર્ણિમાપક્ષ' અને 'પૂર્ણિમાગંઢ' શબ્દો લખાયા છે. આ હુદારાં સ્પષ્ટ અણ્ણાય છે કે 'લીમપણીય ગંગા' પૈદુભિક ગંગાની જ એક શાખા છે; તથાપિ શાખાને સ્વતંત્ર શબ્દ તરીકે ઉલ્લેખવાની પુરાણી ઇઢીને અનુસરીને અમોદે આ સ્થાનકે 'લીમપણીય' શબ્દની સાથે 'ગંગા' શબ્દ લેખ્યો છે.

જન તીર્થ ભીમપણી અને રામદૈન્ય.

૭૬

પ્રતિ ૦ શ્રીપૂર્ણિમાપદે મીમપણીય ભ ૦ શ્રીસુનિચંદ્રસૂરિપહે શ્રીવિનષચન્દ્રસૂરીલાલુણ-  
દેશોનેતિ ભર્દું ॥\*॥

### પરિશિષ્ટ ચ.

#### ભીમપણી ( ભીલાડિયા ) તીર્થના લેખો—

૧ સંવત् ૧૨૧૫ વર્ષે વૈશાખ શુદ્ધ ૯ દિને શ્રે૦ તિહણસર ( ? ) ભાર્યા  
રાંસી ભેયોર્થ રતમા (ના) કેન શ્રી શાંતિનાથવિંબ કારિતં પ્રતિષ્ઠિતં ન-તિ-ગર્ભીય  
શ્રી…… ( વર્દ્ધમાન ? ) સૂરિશિષ્ટે શ્રી રત્નાકરસૂરિમિઃ । \*

૨ સંવત् ૧૩૨૪ વૈશાખ વદ્દિ ૫ બુધે શ્રી ગૌતમસ્વામિમૂર્તિઃ શ્રી જિને-  
શરસૂરિશિષ્ટે શ્રી જિનપ્રવોધસૂરિમિઃ પ્રતિષ્ઠિતા કારિતા ચ સા……પુત્ર સરિવિઝ-  
જનેન મૂળદેવાદિબ્રાહ્માસુહિતેન સ્વશ્રેયોર્થ કુદુંબભેયોર્થ ચ । \*

૩ સં ૧૩૪૪ વર્ષે જ્યેષ્ઠ શુદ્ધ ૧૦ બુધે શ્રે૦ કલામસિહેન ઘંબિકા  
કારિતા । \*

૪ સં ૧૩૪૪ વર્ષે જ્યેષ્ઠ શુદ્ધ ૧૦ શ્રે૦ કલામસિહેન કારિતઃ । \*

૫ સં ૧૩૫૧ વર્ષે ગૂજરાતીય ઠ૦ ખીમાસુતયા ઠ૦ લચમીકુલિસંભૂતયા  
વાઈ હીરકથા આત્મશ્રેષ્ઠસે શ્રીપાર્વતાનાથવિંબ કારિતં પ્રતિષ્ઠિતં શ્રીસુ ( ન ? ) રેશર-  
સૂરિમિઃ । શુભ્મ મવતું । \*

૬ સંવત् ૧૩૫૮ વર્ષે આધિન વદ્દિ ૧૫ સોમે શ્રીમાલાજ્ઞાતીય શ્રેષ્ઠિ  
સોમણ સુત સમરાકેન મૂર્તિઃ કારાપિતા । \*

\* ઉપરના પાંચે લેખો શ્રીખુદ્દિસાગરસૂરિ સંગૃહીત 'નૈન ધાતુપ્રતિમા લેખ સંગ્રહ'  
ભાગ ૧ લા મા અનુષ્ઠાને નંબર ૩૦૮-૧૧૩-૩૪૪-૩૮૫-૩૮૮ તરીકે છ્યાયેલ છે.

૧ આ લેખ ભીલાડિયાના દેહરામા રહેલી એક ધાતુની પ્રતિમા ઉપર છે.

૨ આ લેખ ભોયરાની અંદર એક આલામા ઐદેલી ગૌતમ સ્વામિની પ્રતિમાને નીચે છે.

૩-૪ આ અને લેખો જભીનમાથી નીકળેલ અને હાલ ગામભા નભિનાથના મહિરમા  
રહેલી અંભિકાની અને એક દેવની ભૂતિં નીચે ડોતરેલા છે.

૫ આ લેખ પણ ભીલાડિયાના મહિરમાની એક ધાતુની પ્રતિમા ઉપર છે.

૬ ધર્મજ્ઞાનાની દક્ષિણ્ય ભીત પાસેના શિવમહિરની ભીતમા જાંલા એક પત્થર ઉપર  
છોક્ક દેવતાની નાની ભૂતિં છે અને તેની નીચે આ લેખ નૈન હોવાની  
અભને શાંક છે.

## परिशिष्ट क.

## रामसैन्यतीर्थना लेखो—

१ अनुवर्तमानतीर्थ—प्रणायकाद् वर्धमानजिनवृषभात् ।

शिष्यकमानुयातो जातो वज्रस्तदुपमानः ॥

तच्छाखायां जात स्थानीयकुलोद्भूतो (द्वावो) महामहिमा ।

चद्रकुलोद्भवस्तत (तो) वटेष्वशाख्यः क्रम—बलः ॥

थारापद्रोद्भूतस्तस्माद् गच्छोत्र सर्वदिक्खयातः ।

सुद्धा—यसो (शुद्धाच्छयशो) निकरैर्घवलितदिक्चक्रवालोस्ति ॥

तस्मिन् भूरिषु सूरिषु देवत्वमुपागतेषु विद्वल्लु ।

जातो ज्येष्ठार्यार्थस्तस्मात् श्रीशांतिभद्राख्यः ॥

तस्माच्च शालिभद्रो भद्रनिर्धिर्गच्छगतबुद्धिः ॥

श्रीशांतिभद्रसूरौ प्रतपति जा— — — पूर्णभद्राख्यः ।

रघुसेना—स्ति— — — — बुद्धीन् ॥

— — प(य?) दिवं विवं नाभिसूनोर्महात्मनः ।

लह्म्याश्र्वचलतां ज्ञात्वा जीवितव्यं विशेषतः ॥

मंगलं महाश्रीः ॥ संवत् १०८४ चैत्रपौर्णमास्याम् ॥<sup>१</sup>

२ श्रीथीरापद्रीयगच्छे रघुसेनीयराज्ये सं० १०८.....<sup>२</sup>

३ संवत् १२८८ वर्षे वैशाख शुदि १० गुरौ श्रेऽ राजा धनाकयोः  
सुत केलहणेन भातु श्रेयोर्यं प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता पं० पूर्णकलसेन ॥<sup>३</sup>

१ आ प्रशस्ति ज्ञातीनमाथी निक्षेप अने हालमा रामसैन्यना जिनमहिना हाटनी अंदर पडेला धातुना एक भेटापरिकर उपर लधेवी छे.

२ आ लेख ऐतमाथी निक्षेप धातुना भेटाकाउसजिभयाना पगनी धासे लधेलो छे. लेखना छेलो डेलो लाग त्रुटि गयो छे. सं. १०८४ भाँथी चोगडो उडी गयो जल्लाय छे तेथी हाल सं. १०८ वंचाय छे.

३ आ लेख वगडामाथी निक्षेप एक न्हानी धातुनी प्रतिभानी पछाडे छे.

## સહાતુભૂતિથી જીવન-સાર્કદય.

૮૧

## સહાતુભૂતિથી જીવન-સાર્કદય.

વીજલદાસ મુળયંદ શાહ, ડી. એ.

“તમે તમારા પોતાના આત્માનો તિવા દૃષ્ટિથી વિચાર કરો, પરંતુ ક્યારે તમે થીના લોડો તરફ જુઓ ત્યારે અનુક્રમયાયુક્ત દૃષ્ટિથી જુઓ. સાધારણ મનુષ્યના મુખમાંથી અપશંદો નીકળે છે તેવા તમે કદ્વીપણું ન જોલો.”

છલા નુદીલર વિલક્કસ.

“તમારી પીડા કેવી છે એમ હું પીડિત મરુષ્યોને પૂછતો નથી, પરંતુ તેઓની પીડા જોઈને હું પોતે પીડિત બની જાઓ છું અને પીડાનો અનુભવ કરવા લાગું છું”

વાદટ નુદીલર મેન.

નેટલું આત્મ-દમન આપણે પ્રાણ કરી લીધું હોય છે તેટલા પ્રમાણમાં આપણે થીના લોડો. તરફ સહાતુભૂતિ દર્શાવી શકીએ છીએ. જ્યાંસુધી આપણે પોતાની જાત ઉપર દ્વારા કરીએ છીએ અને પોતાની તરફની સહાતુભૂતિ દર્શાવીએ છીએ ત્યાંસુધી આપણે થીનાનો. વિચાર કરી શકતાં નથી. જે આપણે આપણી પોતાની પ્રશ્નસા, રક્ષા અને સંમતિનો વિચાર કર્યો કરીએ છીએ તો આપણે ડી. જાની સાથે પ્રેમમય વ્યવહાર કરી શકતાં નથી. થીનાનો વિચાર કરવો અને પોતાની જાતનો વિચાર ભૂલી જવો તેને સહાતુભૂતિ કહેવામાં આવે છે.

અન્ય મરુષ્યો તરફ સહાતુભૂતિ દર્શાવવા માટે પહેલાં આપણે તેઓની સ્થિતિ સમજવી જોઈએ અને તેઓની સ્થિતિ સમજવા માટે તેઓના સંભાળમાં પ્રથમથી ખરાળ વિચારો ખાંધી કેવા જોઈએ નહિ-કેવા તેઓ હોય છે તેવાજ તેઓને જોવા જોઈએ. આપણે થીના લોડોની આંતરિક સ્થિતિની અંદર પ્રવેશ કરવો જોઈએ અને તેઓને નેત્રોં વડે જોઈને તથા તેઓના અનુક્રમને સમજને તેઓની જેવા જની જવું જોઈએ; પરંતુ એટલું તો નિઃસંદેહ છે કે જેઓની જુદ્ધ અને અનુભવ આપણાં કરતાં ચઠીયતા છે અને તેમજ જેઓ કરતાં આપણે આપણી જાતને ઉત્ત્ર અને ઉત્ત્ય જાનીએ છીએ તેવા લોડોની સાથે આપણે ઉક્ત પ્રકાશનો વ્યવહાર કરી શકતાં નથી; કેમકે સહાતુભૂતિ અને સ્વાર્થ એક સ્થાન પર સ્થિર રહી શકતાં નથી; પરંતુ આપણે આપણી જાતને જે પાપો અને કલેશોમાંથી ભક્તલતા પૂર્વક સુક્રત કરી લીધી છે તેવા પાપો અને કલેશોમાં જેઓ ક્ષણાચ્ચેવા છે તેઓની તરફ આપણે સહાતુભૂતિ દર્શાવી શકીએ છીએ. જે પુરુષની મહત્ત્વાં આપણા કરતાં વધારે હોય છે તેને આપણે આપણી સહાતુભૂતિની છાયાથી ઢાંકી શકતાં

નથી, પરંતુ આપણે તેઓની સાથે એવી રીતે વર્તી શકીએ કે જેથી આપણે તેઓની મહાત્મા સહાનુભૂતિને લાભ લઈ શકીએ અને જે પાપો તથા હૃદ્દોમાં આપણે ઈસાગલા હોએ તેમાંથી આપણે સુક્ત થઈ શકીએ.

પ્રકાપાત અને હૃદ્દોમાનો સહાનુભૂતિના માર્ગમાં મહાન અંતશય કૃપ છે અને અંહુકાર સહાનુભૂતિ ગ્રહણ કરવામાં ખાધા કારક થઈ પડે છે. જે મનુષ્યને માટે તમારા મનમાં પ્રથમથીજ તિરસ્કાર હોય છે તેની સાથે તમે સહાનુભૂતિ રાખી શકતા નથી. બળી જેને માટે તમારા મનમાં પ્રથમથીજ દેખની લાગણી ઉત્પન્ન થઈ હોય છે તે મનુષ્ય તમારી સાથે સહાનુભૂતિથી વર્તે એમ તમે છાચ્છતા નથી. જે મનુષ્ય તસે તમને તિરસ્કાર હોય છે તેમજ જેના પ્રતિ તમે તમારી પાથનાખ્લીથી ધૂર્ઘાર્થી રાખો છો તેનું જીવન તમારા સમજવામાં આવી શકતું નથી; પરંતુ તમે તેને માટે તમારા હૃદ્દ્યમાં કેવા અપૂર્ણ અને અપઠક્વ વિચારો બાંધા હોય છે તે અતુસાર તેરું જીવન તમારા સમજવામાં આવી શકે છે. તમારી પોતાની શુદ્ધ અને કારણ શૂન્ય સમૃતિને લઈને તમને ડેવળ તેની જુરાઈ દ્વિંગત થઈ શકે છે અને ભાતાઈ દ્વિંગત થઈ શકતી નથી.

જે તમારે બીજા લોકોના જીવનને યથાર્થતઃ સમજવું હોય તો તમારે તેની તથા તમારી વર્ચે ઝચિ વા અર્દચિ, પ્રકાપાત અને સ્વાર્થી વાસનાઓને આવવા હેવી જોઈએ નહિ, તમારે તેના કાર્યોનો વિરોધ ન કરવો જોઈએ અને તમારે તેના વિચારોને દ્વારિથી ઠરાવવા જોઈએ નહિ. અદ્ય સમય પર્યત તમે તમારી જતને પૃથ્ર રાખીને તેની સ્થિતિનો યથાર્થ અભયાસ કરો. માત્ર આ રીતે તમે તેના ચિત્ર બનાને તેના જીવન તથા અતુભવને પૂર્ણતાથી સમજ શકો અને જ્યારે તે સમજ લેશે ત્યારે પછી તમે કઢીપણ તેને નિનિદ્દા અને દ્વારિથી ઠરાવશો નહિ. મનુષ્યો એક બીજાને દ્વારિથી અને અપરાધી અનાવવાથી એક બીજાને યથાર્થ રીતે સમજ શકતા નથી. જ્યાંસુધી તેઓ પોતાની જત ઉપર વિજય પ્રાપ્ત કરી લેતાં નથી અને પોતાની જતને શુદ્ધ અનાવતા નથી ત્યાંસુધી તેઓ સમજ પણ કેવી રીતે શકે ?

વૃદ્ધિ, પરિપદવતા અને વિસ્તારનેજ 'જીવન' કલેવામાં આવે છે અને એક રીતે જેતાં તો પાપાત્મા અને પુણ્યાત્માની વર્ચે વિશેષ લેણ નથી, પરંતુ ઇકત શ્રેષ્ઠી અને ક્રમનોજ લેણ રહેલો છે. પુણ્યાત્મા મનુષ્ય કોઈ વખતે પણ પાપાત્મા હુશે અને પાપાત્મા મનુષ્ય જીવિષ્યમાં પુણ્યાત્મા અની જશે. પાપાત્મા મનુષ્ય એક બાળક સમાન છે અને પુણ્યાત્મા વૃદ્ધ સમાન છે. જે મનુષ્ય પાપાત્મા મનુષ્યોને દુષ્ટ માનીને તેનાથી પોતાની જતને પૃથ્ર રાખે છે તે એવા માણુષની જેવો છે કે બાળકોને નિર્બાધ, અનાજ્ઞાકારી જાને રમત રમનારા માનીને તેઓએ દુષ રહે છે.

## સહાતુભૂતિથી જીવન-સાર્વદ્ય.

૫૩

જીવન સમાન હોવા છતાં ટેપાવમાં કંઈક લેછ. માલુમ પડે છે. પુણ્યો વૃક્ષથી પૃથ્ર પદાર્થ નથી, પણ વૃક્ષનાજ અંગભૂત છે. તેવીજ રીતે પુણ્યાત્મા મનુષ્ય એક પરિપક્વ અને પરિણુત છે. પાપાત્મા મનુષ્ય એ છે કે જેની બુદ્ધિ અપરિપદ્ધ અને જે અજ્ઞાનતા વચ્ચ થઈ અશુદ્ધ કાર્ય પ્રણાલીકામાં ઝયિ રાખે છે. પુણ્યાત્મા મનુષ્ય એ છે કે જેની બુદ્ધિ પરિપક્વ છે અને જેની કાર્ય પ્રણાલીકા શુદ્ધ અને સત્ય છે. એક પાપાત્મા મનુષ્ય બીજા પાપાત્મા મનુષ્યને દૂષિત ખનાવે છે, કારણ કે તે કાર્યની અશુદ્ધ પ્રણાલીકા છે. પુણ્યાત્મા મનુષ્ય પાપી મનુષ્યને દૂષિત ડરાવતો નથી, ઉમડે રેને એ લાતનું દમરણ રહે છે કે “એક વાર હું પોતે પણ એ દશામાં હતો” તેથી તેને પોતાનો લખુણાતા અથવા મિન સમજું ને તેની સાથે ગલી સહાતુભૂતિ રાખે છે, કારણ કે સહાતુભૂતિ રાખવી તે કાર્યની શુદ્ધ અને ઉજ્જવલ પ્રણાલીકા છે.

જે પરિપક્વ મહાત્મા સર્વની સાથે સહાતુભૂતિ રાખે છે તેને બીજાની સહાતુભૂતિની અપેક્ષા હોતી નથી; કેનકે તેણે પાપ અને કલેશ ઉપર જીત મેળવી છે અને તે સર્વદા આનંદમાંજ ભગ્ન રહે છે. પરંતુ કે કિંદિ હોય છે તેને સહાતુભૂતિની પરમ આવશ્યકતા છે અને જે પાપિષ્ઠ હોય છે તેજ કિંદિ હોય છે. જ્યારે મનુષ્ય એમ સમજવા લાગે છે કે પ્રત્યેક માનસિક વા કાયિક ગાપને લઈને તે અવશ્ય કલેશ પ્રાપ્ત કરશે, ત્યારે તે બીજા લોકો ઉપર હોષારોપ કરવાનું ત્યાજ હોછે અને પાપથી ઉપરથી પોતું તેઓ કલેશમય જીવન જોઈને તે તેઓની સાથે સહાતુભૂતિ રાખવાનો આરંભ કરે છે. જ્યારે તમે તમારી પોતાની લાતને પવિત્ર અને શુદ્ધ અનાવી લેશો ત્યારે તમને ઉપરોક્ત વાત સ્પષ્ટ સમજશો.

જ્યારે મનુષ્ય પોતાના મજના વિકારિને શુદ્ધ કરી લેછે, સ્વાધીં છચ્છાયાને ખદ્દી નામે છે અને અહુકારને દૂર કરે છે, ત્યારે તે સર્વ પ્રકારના માનુષિક અનુભાવોમે અથાતુ સમસ્ત પાપ, હુંઘ, શોક, નિચાર અને ઉદ્દોષને તથા ધર્મનીતિને સંપૂર્ણતાઃ સારી રીતે સમજ થકે છે. સંપૂર્ણ આત્મા-દમન અને સંપૂર્ણ જ્ઞાન એજ ખરેખરી સહાતુભૂતિ છે. જે મનુષ્ય બીજા લોકોને પોતાના પવિત્ર હૃદયની સ્વચ્છ દૂષિથી બુઝે છે તે તેઓના તરફ અવશ્ય કર્યાની હર્ષાવી શકે છે, તેઓને પોતાના દેહનાજ અંગભૂત ગણે છે, તેઓને પતિત અને પૃથક નહિ, પરંતુ પોતાનાજ આત્મા સમાન લેણે છે અને તેઓના જ્ઞાનધમાં તે સમજે છે કે=જેવાં પાપો હું પહેલાં કરતો હતો તેવાજ તેઓ પણ કરી રહ્યા છે, જેવો કલેશ મેં અનુભંગો હતો, તેવોજ તેઓ પણ અનુભવી રહ્યા છે અને જેની રીતે મને આદ્યાંતર શાંતિની આપ્તિ થઈ તેવીજ રીતે તેઓને પણ થશો.”

ते ज मनुष्य भद्रेखरो लटो अने धीमान गण्यायछेडे के प्रयत्न पक्षपाति होतो नथी के सर्वनी साथे सहानुभूति राखे छे, अने के धीजओना होप्ये ज्ञेतो नथी. मनुष्यनी युद्धि केट्ये दूर पहेंचती होय छे तेट्ये दूर ते पोताना सहानुभूति विस्तृत करी शके छे; अने जेम जेम मनुष्य नम अने हयावान अनतो जाय छे तेम तेम ते विशेष युद्धिमान अनतो जाय छे. सहानुभूति संकुचित होवाथी हुद्य संकुचित अने छे. सहानुभूतिने विस्तृत कर्वी ते लवनने प्रकाशित अने हुर्वित कर्वा भराभर छे, तेमज अन्य मनुष्योने भाटे प्रकाश अने आनंदनो भार्ग सुगमतर अनाववा भराभर छे.

धीजनी साथे सहानुभूति राख्यी एट्ये तेना शरीरने पोताना शरीरमां धारणु कर्वुं अने तेनी साथे समान भावथी वर्त्त्वुं, डेमडे स्वार्थशून्य प्रेम अत्यंत शीघ्रताथी ऐक्य उत्पन्न करे छे. के मनुष्य समस्त प्राणुधारीओनी साथे सहानुभूतिथी वर्त्ते छे ते ये सर्वनी साथे तन्मय गने छे अने तेने प्रेम, नीति विष स्पष्टतः युद्धिगत थाय छे.

मनुष्य धीज मनुष्योने पोतानी सहानुभूतिथी एट्ये दूर राखे छे तेट्येज दूर तेनाथी स्वर्ग, शांति अने सत्य रहे छे. के स्थेप्ते तेनी सहानुभूति समाप्त थाय छे त्यांथीज अधकार, हुःअ अने संक्षीलनो आरंभ थाय छे, डेमडे धीज लोडोने पोताना प्रेमथी दूर राख्या ते पोतानी जातने ज प्रेमना आनंदथी दूर हायना हुद्य छे अने स्वार्थना अधकारमध्य काराघृहमां सडया कर्वा तुल्य छे.

ज्यारे मनुष्यनी सहानुभूति असीम गने छे त्यारे ज तेने सत्यनो अनंत प्रकाश दृष्टिगत थाय छे. असीम प्रेममाथीज असीम आनंदनी प्राप्ति थाय छे. सहानुभूति आनंदमध्य छे. एमाथीज सर्वीतम अने पवित्र आनंद उपतम्य थाय छे. सहानुभूति स्वर्गीय छे, कारणु के तेना प्रकाशमां सर्व प्रकारना स्वार्थी विचारो नष्ट थर्ह जाय छे अने सर्वनी साथे ऐक्यान अर्थात् आईयातिमक समानतानो दृष्ट अंग राख्याथी पवित्र आनंदनी संप्राप्ति थाय छे. ज्यारे मनुष्य सहानुभूति राख्यी लल्ल हे छे, त्यारे तेनु लवन, तेनी दृष्टि अने तेनुं सान विश्व अनी जाय छे.

ज्यांसुधी, मनुष्य धीज लोडो विषे स्वार्थी विचारो कर्वानुं तल होतो नथी, त्यांसुधी ते तेओनी साथे साची सहानुभूति राखी शकतो नथी. के मनुष्य साची सहानुभूति राखे छे ते धीजओने पोताना जेवा जेवानो प्रयत्न उरे छे अने तेओना विशेष पाप, वारनाच्यो, हुःअ, विश्वास, पक्षपात इत्याहि जायवानी चेहा करे छे. ते छेवटे जाणी ले के डे, लोडो पोतानी आईयातिमक उत्तिनी करी श्रेणी सुधी पहेंची चुक्या छे, तेओनो अनुभव उट्ये छे अने तेओ पोतानी हशाने हमेला भद्री शके ऐम छे के नहि. ते उपरांत ते जाणी ले छे के तेओ तुं सान लेवा प्रकारनुं छे, ते अतुस्तार तेओ विचारो अने कार्यो करे छे. वणी ते ये पञ्च

## સહાનુભૂતિથી જીવન-સાર્કદાર્ય.

૬૫

જાળી લે છે કે તેઓની અવ્ય યુદ્ધ અને જ્ઞાન સારા ઉત્તુકુણૈ ક્ષારા સહાયતા અને ઉત્તીત પાની શકે એમ છે, પરંતુ તેમાં તત્કષ્ણ પરિચિતન વધુ શકે તેમ નથી. વિવેક અને પ્રેમના પુણ્યોના વિકાસ માટે સમયની આવશ્યકતા છે અને છધ્યા તથા મૂર્ખતાનો શિદ્ગતાથી નાશ થઈ શકતો નથી.

આ પ્રકારના મનુષ્યો પોતાના સર્વ પરિચિત મનુષ્યોના આવયન્તર જગતના ક્ષારા શોધી લે છે, તેને ઉધાડે છે, તેની અંદર પ્રવેશ કરે છે અને તેઓનાં જીવનનાં પવિત્ર મંહિરમાં નિવાસ કરીને તેઓ સર્વની સાથે એકમેક અની જાય છે. તેઓને તિરસ્કાર, કૌદ્ધ અને દ્રેષ્ટ કરવાનું કંઈ પણ કારણ મળતું નથી અને તેઓનાં હૃદયમાં અધિકાર, અનુકંપા, ધૈર્ય તથા પ્રેમનો નિવાસ થવા લાગે છે. આવા મનુષ્યો પોતાની જાતને સર્વમય માને છે અને એમ સમજે છે કે સર્વ મનુષ્યો પોતાની સંમાન છે અને તેઓની પ્રવૃત્તિઓ પણ પોતાની જેવી છે, માત્ર તેમાં ન્યુનાધિકતાનોજ લેદ છે. અર્થાત્ તેઓ બીજાના હૃદયમાં પાપ-પ્રવૃત્તિઓ કામ કરતી જુએ છે તો તેઓ પોતાનાં હૃદયમાં ઉત્તરી જુએ છે કે આ પ્રકારની પ્રવૃત્તિ તો મારા મનમાં પણ રહે છે, પરંતુ તેણે પાપ તરફ જરૂર છેડી દીધું છે. જો તેઓ બીજાનાં હૃદયમાં પુણ્ય પ્રવૃત્તિ જુએ છે તો તેઓ પોતાનાં મનમાં પણ એવીજ પુણ્ય પ્રવૃત્તિ જુએ છે.

એક મનુષ્ય બીજા મનુષ્યોથી કિસ્ય નથી. જે લેદ છે તે પ્રકૃતિનો નથી, પરંતુ માત્ર કિયતિનોજ છે. કંઈ ડોઈ મનુષ્ય બીજાને પોતાનાં કરતાં અધિક પવિત્ર ધારી પોતાની જાતને તેનાથી કિસ્ય માને તો તે તેતું અજ્ઞાન સૂચયે છે. વસ્તુતા: ડોઈ ડોઈનાથી પૃથ્વી નથી. સહાનુભૂતિના પવિત્ર મંહિરમાં પુણ્યાત્મા અને પાપાત્મા લેગાં મળે છે અને એક જને છે.

અત્ય પ્રેરિન થશે કે સહાનુભૂતિની આવશ્યકતા સૌથી વધારે કોને હોય છે? પુણ્યપ્રતાપી, જ્ઞાની, યાને મહાત્માઓને તેની આવશ્યકતા હેતી નથી. જ્ઞાનરહિત અપરિપ્રક્રિય મનુષ્યનોજ તેની અનિવાર્ય જરૂર હોય છે. જેઓ જેટલા વધારે પાપી છે તેઓ તેટલા વધારે દુઃખી છે, આથીજ તેઓને સહાનુભૂતિની તેટલીજ અધિક આવશ્યકતા છે. પુણ્યાત્મા પુરુષોને સહાનુભૂતિની આવશ્યતા નથી, પરંતુ પાપાત્માઓનોજ છે. જેઓ દૂષ્પિત કર્મો વડે હીર્થ સુભય પર્યંત પાપ સુંચય કરી રહ્યા છે તેઓને સહાનુભૂતાની મહાન અગત્ય છે.

એક પ્રકારનું પાપ કર્મ કરનાર માણુસ બીજા પ્રકારનું પાપ કરનારને અપરાધી અને અધમ માને છે. તે એમ વિચારતો નથી કે જોકે માર્દ અને તેનું પાપ કિસ્ય પ્રકારનું છે, તો પણ આખરે તે પાપજ છે. તે એમ નથી વિચારતો કે સર્વ પ્રકારનાં પાપ એકજ છે, માત્ર તેનાં સ્વરૂપમાંજ લેદ છે. મનુષ્ય પોતે જેટલો પાપી

होय छे तेष्वोऽज्ञ ते भीजन्नोने पापी धारे छे. ज्ञारे नेने सहजान थाय छे अनेते पापथी विमुण अने छे तथा लेनाथी जयवानो यत्न करवा लागे छे, त्यारे ते भीजन्नोने पापी धारता अटडे छे अने तेओनी तरक्कीसहानुभूति दर्शाववा लागे छे. परंतु आ एक अटल नियम छे के हाद्रियोने वश थर्ह गयेला पापी भनुष्यो परंस्पर एक भीजने दूषित धारे छे अने धिक्कारे छे. जे भनुष्यने सर्व लोडा दूषित धारे छे अने जेने सहु धिक्कारे छे. ते जे ते लोडा ना धिक्कारने लाभदायक समल विचार करे के “मारा अपराधीने लहने तेओ भने दूषित भाने छे” तो तेनी उन्नति थवा लागे छे अने ते याते भीजते दूषित भानवालुं त्याल दे छे.

जे वास्तविक रीते सत्य परायण अने लडो भनुष्य छे ते भीजनी निंदा करता नथी. आवे भनुष्य स्वार्थ अने उद्देशने द्वार राखीने प्रेम अने शांति सहित रहे छे तेमल सर्व प्रकारनां पापो अने तेजाथी जे जे हुःअ अने कवेश समुपस्थित थाय छे ते सर्व लेना जाणुवामां आवे छे. ते निद्रामांथी जागीने, ज्ञाननो, प्रकाश प्राप्त करीने अने स्वार्थमयताने त्याल लहने सर्वनी साथे पवित्र सहानुभूति राखे छे. जे लोडा आवा भनुष्यने दूषित ठराने छे अने धिक्कारे छे तो पछु ते तेओनी साथे सहानुभूति प्रगट करे छे अने विचारे छे के “लोडा अज्ञानताने लहने भने धिक्कारे छे अने तेओने पोतानां भराब कर्मेतुं द्वव बोगववुं पडयो.”

जेओ तमने धिक्कारता होय तेओनी साथे आत्महमन अने ज्ञान वृद्धिनी सहायथी स्नेह राखता शीजो. तेओनी झुराई तरक्की दृष्टि न करो; कठाचित् तमारा पोताना भनमां पछु डाई अनिष्ट वात हुशो. जे तमेतमारा पोताना दोषाने संखुर्ष रीते समल लेशो तो तमे भीजनी निंदा करवालुं त्याल लहने तमारी पोतानी जातने धिक्कारवा लाभयो. साधारणु दीते सहानुभूति कहेवामां आवे छे ते अरेखरी जेने सहानुभूति नथी, परंतु ते एक प्रकारने। शारीरिक स्नेह छे. जे आपणी साथे स्नेहलाव राखे तेनी साथे आपणे स्नेहलाव राखीये, ए तो एक मातुषिक प्रकृति छे; परंतु जेओ आपणी साथे स्नेह न राखता होय तेओनी साथे स्नेहलाव राखीये तेज पावत्र सहानुभूति कही शकाय.

सहानुभूतिनी आवश्यकता हुःअ अने कवेशने लहने ज छे; केमडे आ जगतमां एवुं डाई नथी के जे हुःभी न होय. हुःअमांथी ज सहानुभूति उत्पत्त थर्ह छे. एक वर्षमां अथवा एकज छुवनमां भानुषिक हुद्दय हुःअ पामीने पवित्र अने स्वच्छ अनी शक्तुं नथी, परंतु वारंवार जन्म लहने अने हुःअ पामीने भनुष्य प्रेम तथा ज्ञाननां परिपक्व अने अभूद्य इणो प्राप्त करे छे. आ रीते जन्म जन्मांतरो पधी ए समजवा लागे छे. अने सहानुभूति राखवा लागे छे. नियमेतुं उत्तरधन ए ज पाप छे. भनुष्य पोतानी अज्ञानताने लहने नियमेतुं उत्तरधन करे छे.

## सहानुभूतिथा ज्ञवन-साकृत्या.

८७

जे पाप छे ते ज क्लेश छे. एकत्रुं एक पाप वारंवार करवाथी तेनुं इण अर्थात् क्लेश वारंवार लोगववो पडे छे, अने वारंवार क्लेश लोगववाथी ए नियमतुं ज्ञान थाय छे अने ज्यारे ज्ञान थाय छे त्यारे सहानुभूतितुं पवित्र अने सुंदर कुसुम धीली रहे छे.

सहानुभूतिनो एक अंश हया छे. संसारमां हुःभित अने उिलष्ट मनुष्योनां हुःभ द्वार करवा भाटे अने तेबोने धैर्य आपवा भाटे हयानी महान अगत्य छे. “ हया अशक्त मनुष्योने भाटे संसारन डोखत गनावे छे अने शक्तिमान मनुष्योने भाटे संसारने उत्तर घनावे छे. ”

कूरता, अद्वया, द्वाषारोप आने क्लेधने द्वार करवाथी हयामां वधारो थाय छे, जे मनुष्य द्वार पापी मनुष्यने तेनां पापतुं इद पापता जेईने गोतानां छुदयने कठोर घनावीने कडे छे के “ ते गोतानां पापितुं उचित इण लोगवी रह्या छे ” ते हया घोतावी शक्तो नथी. ज्यारे ज्यारे मनुष्यो धीज प्राणीओ उपर कठोर अने छे अने तेबो तरक्ष आवश्यक सहानुभूति हर्यावतो नथी त्यारे त्यारेज ते गोताने संकीर्ण घनावे छे, गोताना आनंदने न्यून करे छे अने क्लेशोपक्षागनां धीज वावे छे.

धीज दोडानी अधिकतर सझलता जेईने हर्ष पापवो अने तेनी सझलता ए गोतानीज छ एम भानवुं ए सहानुभूतिनो धीज अंश छे. जे मनुष्य धृष्टी द्वेष आहि लागणीओथी मुक्त छे अने जे धीज दोडातुं साढ़े सांसजीने हर्षित अने छे ते मनुष्य धन्य छे ए निःसंहेक वात छे.

गोताथी न्यूनतर प्राणीओनी रक्षा कर्वी ते त्रीजे सहानुभूतिनो अंश छे. अवाचक प्राणीओनी रक्षा करवा भाटे महान सहानुभूतिनी परम आवश्यकता छे. शक्तिनी शोला रक्षा करवामां रहेकी छे, नहु के नाश करवामां नहाना ल्योनी रक्षा करवाथी ज्ञवन सझल थाय छे. सर्व प्राणीओ एक छे. नहानामां नहानां प्राणीओ भेदामां भेदामा प्राणीओली डेवण शक्त अने युद्धिनी न्यूनताधिकतामां भजत छे, ज्यारे आपणे हयाणु अनी अन्य प्राणीओनी रक्षा करीजे धीजे त्यारे आपणा ऐक्षर्य अने हर्षमां अनुपम वृद्धि थाय छे. एथी उक्कुं ज्यारे आपणे अविवेकी अने कठोर घनीने प्राणीओने हुःभ आपीजे धीजे त्यारे आपणुं ऐक्षर्य आचाहित अने छे अने हर्ष युआध जाय छे. मनुष्यनी सात्त्विक मङ्गुति डेवण हया, ग्रेम, सहानुभूति अने स्वार्थशून्य पवित्र कर्माने परिषुभिंगत, सुरक्षित अने परिषुभिव अने छे.

धीज दोडा तरक्ष सहानुभूति राखवाथी आपणे आपणी तरक्ष धीजनी मङ्गुतुभूतिमां वधारो कठीजे धीजे. डेईना तरक्ष सहानुभूति राखवाथी ते नष्ट थती

॥

## શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

નથી. નહાનામાં નહાનું પ્રાણી પણ સહાતુભૂતિના સ્વર્ગીય સ્પર્શથી આનંદિત બને છે, કારણુકે સહાતુભૂતિ એ એક એવી વિશ્વબ્યાપક ભાષા છે જે સર્વ પ્રાણીઓ સમજ શકે છે. અમેરિકાના ડારટમ્યુર શહેરમાં એક અત્યંત અત્યાચારી અપરાધી મનુષ્ય હતો. જેને અનેક અપરાધને લઇને ધંધાં વર્ષે સુધી કારણૃહમાં રાખવામાં આવ્યો હતો. સર્વ લોકો તેને અત્યંત લયાનક, કઠોર અને નિર્દ્દિય ગણુત્તા હતો. અને કારણૃહમાં પહેરેળીરોએ પણ તેને સુધારવાની આશા તળ દીધી હતી. એક દિવસ જે કોટીમાં તેને રાખવામાં આવ્યો હતો ત્યાં એક ભૂખ્યો અને અસ્વર્થ ઉદ્દર આવી ચલ્યો. તે ઉદ્દરની અસહ્યા અને હુર્ભળ દ્વારા જોઈને તે પાપી મનુષ્યનાં હૃદયમાં દ્વારાની વિજળિની સંચાર થઈ ગયો. અને તે પોતાની તેમજ એ ઉદ્દરની એકજ પ્રકારની દ્વારા જોઈને તેની તરફ સહાતુભૂતિ પ્રકટ કરવા લાગ્યો. તેણું તે ઉદ્દરને પોતાના એક પદરખામાં નિવાસ આપ્યો અને પોતાની ખાવા પીવાની વસ્તુઓમાંથી તેને અવરાવી પીવરાવી તેનું પોષણ કર્યું. જે અત્યંત કઠોર અને દૂષિત હૃદયમાં ડેઝીપણ મનુષ્યને માટે દ્વારાનો અંશ પણ નહોતો, તે હૃદયમાં એક ઉદ્દરની ખાતર સહાતુભૂતિના સ્વર્ગીય દીપક પ્રકટ થયો. પોતાથી શક્તિહીન મનુષ્યો તરફ તેની દ્વારા અને ગ્રીતિમાં વૃદ્ધિ થવા લાગી અને પોતાથી અધિક શક્તિવાન મનુષ્યો તરફ તેની તિસ્તકારની લાગણી ઘટવા લાગી. તે પહેળીરોની આજા સંપૂર્ણ રીતે પાળવા લાગ્યો. પહેરેળીરોને પણ આક્ષર્ય થયું કે આટલો બધો કઠોર હૃદય મનુષ્ય એકાએક આવો નામ ડેવી રીતે બની ગયો. તેની સુખાકૃતિ પણ બદલાઈ ગઈ. નેત્રો, એષ આદિની લીખણુતા થીમે ધીમે ડેમલતા અને પ્રેમમાં પરિષ્ણિત થઈ ગઈ. હવે તે એક દૂષિત અને પાપી ડેવી નહોતો. તેનું મન પુષ્યમાં અસિરત બની ગયું. છેવટે એ સધળો વૃત્તાંત અધિકારીઓના લાલુમાં આવ્યો. ત્યારે તેઓએ તેને સ્વતંત્ર કરી મૂક્યો અને કારણૃહમાંથી જતી વખતે તે ઉદ્દરને પણ પોતાની સાથે લઈ ગયો.

એ રીતે બીજા તરફ સહાતુભૂતિ પ્રકટાવવાથી તેનો પ્રવાહ આપણું હૃદયમાં પૂર્ણ વેગથી વહે છે અને આપણું જીવન સર્જલ બને છે. સહાતુભૂતિના દ્વારા આપણું આનંદનો પુરસ્કાર મળે છે અને સહાતુભૂતિનું હાન ન આપવાથી આપણું આનંદ નાથ થાય છે. નાણુસ જેટલા પ્રમાણમાં સહાતુભૂતિ શામે છે તેટલા પ્રમાણમાં તે આદર્શ-જીવન અર્થાતું સત્યાનંદની સમીપ પહોંચે છે. જ્યારે મનુષ્યનું હૃદય એટલું બધું ડેમળ બની જાય છે કે તેમાં એક પણ કઠોર, કટુ વા નિર્દ્દિય વિચાર ઉત્પત્ત થતો. નથી અને તેના માધુર્યને ન્યૂન કરતો નથી ત્યારે તે પવિત્ર સત્ય આનંદમાં ગરકાવ થઈ જાય છે.

પૃતિશમદ્



## આપણી ભાવી ઉજ્જ્વળની દિશા સમજને આહરવાની જરૂર

૧૯

### આપણી ભાવી ઉજ્જ્વળની દિશા ( સમજને આહરવાની જરૂર )

સર્જા ભાઈ બેંગેચો, સ્વપર હિત, શૈય કરવા સહાય છુંછવું લેખાયે. ને અભ્યાત્મા રન્ધિત શ્રેય કરવા આતુરતાથી છુંછતો હૈય તેણે શ્રી વીતરાગ પ્રશ્નાતી માર્ગને યથાચોઽય અનુસરીનેજ ચાલવું લેખાયે. સ્વ ચોભ્યતાનુસારેજ ધર્મ સાધન કરવાની અર્થાત શાસ્કારે કહી છે અને એજ હિતકારી થઈ શકે છે. ચોભ્યતા વગર વસ્તુની પ્રાસિ થઈ શકતી નથી અને કવચિત્જ થાય તે ટકી શકતી નથી તેમ છતાં એવી ચોભ્યતા પ્રાસ કરવા કોઈ વિરલાજ કાળજ રાખે છે અને લાભ પણ તેજ મેળવી શકે છે. પ્રલુનું શાસન કથંવંતુ વેખાય છે તેથી એવા પણ સહ્ભાગી જીવો શાસનમાં હેલા ઘટે છે, મહા પુરુષોના ચરિત્રોને આરીકીયી વાંચી-વિચારી સમજ થકે છે તે તેમાંથી સાર શહી સ્વ ન્યૂનતા ફર કરી શકે છે. આપણું ધારેલું ન થવાથી કલચિત જેહ પણ થવા પામે છે પરંતુ તે નિરશામાં પરિણમવાને બદલે નવી જગૃતી આણુવામાં પરીણમે તોજ તે છુંછવા યોગ્ય છે.

આપણું જીવન શુંક-જડવત જીવનને બદલે જરસ ( સ્વપરને રસ દાયક ) અને એવો પ્રયત્ન સેવતા રહી આગળ કથાય તો કેવું જાર્દ ?

આપણી સંગ્રહાત્માં દેહ છાયાની જેમ વર્તાનારી વ્યક્તિઓનું પણ જીવન તેવુંજ સરસ અને તેવીજ કાળજ આપણે રાખવી ઘટે છે, જેથી સ્વપર ઉજ્જ્વળનાં લગાડે અંતરાય રૂપ નહિ થતાં એક બીજનો વધારે માદ્કગાર થવાય. એવી કર્તૃવ્ય શાવના આપણામાં જીવિવનાની જરૂર છે. ઉત્તમ પ્રકારની વ્યવહારીક, નૈતિક અને ધાર્મિક કુળવણ્ણીની આપણામાં અત્યારે ભારે ભાગી જોવામાં આવે છે તેવીજ આપણી સ્થિતિ હ્યા જનક થઈ પડી છે આવી હુઃખી સ્થિતિમાંથાં સમજનો ઉદ્ધાર જેવા તેવાથી થવો સંભાવિત નથી એતો જ્યારે ગ્રંથ પ્રકાવશાળી નૈષિક અદ્ધાર્થને ધારણું કરનારી શુદ્ધ શાસન પ્રેમી વ્યક્તિઓ સહભાગે જાગ્રત થઈ “ સનિ લિવ કરું શાસન રસી ” એવી ઉદ્ઘાસાવના ચેંગે નિષ્કામ શાસન સેવા કરવા ઉજ-માળ અનશો. ત્યારેને ત્યારેનું સમજના ઉદ્દ્ય સાથે શાસનનો પણ ઉદ્દ્ય થશે. જી કુળવણ્ણીમાં તો અત્યારે ધણીજ ભાગી જોવાય છે. પરંતુ ધીમે ધીમે વ્યક્તિગત સુધારે થવાથી સારુ પરીણ્યામ આવી શકશે. એક ગાંધી અત્યારે કેટલું કરી રહેલ છે અને તે કયા આત્મબન્ધી એટલું પણ વિચારશીલ જનો ગંભીરતાથી વિચાર વાવડે સ્વકર્તવ્યની કંઈક ગાંધી કરી શકે એમ છે. આપણે અત્યારે ચોભ્યતા સંપ્રદ્ય થવાની અને તેવી થઇને સ્વકર્તવ્ય કર્મ કરવાની ભારે જરૂર છે. ને આપણી ઉજ્જ્વળ સાધવા દ્વારા અને અવિરત વિચારણા નર્તતી રહેતાં ખરેખર તેમાંથી કંઈને કંઈ શુભ પરીણ્યામ આવી શકેજ. શુદ્ધ અંતઃકરણનો અવાજ એ હૈની અવાજ તે તેને બનાયર લક્ષ્ય હાઈ સાંભળી આહરવામાં આવે તો તે આપણું અચુક લાભ-કારી અને ઈદ્રિય નિશ્ચહું કથાય નિઅડ ચોગવિશુદ્ધ અન અહિંસાદિક સહદ્યુણોનું

६०

## श्री व्यात्मानं ह प्रकाशः

सेवन करवा इप संवयवडेज न्यारे त्यारे आपणे दूष उत्तरि साधी शक्तिशुं तो  
पधी अत्यारेज प्रभाव रहीत उक्त संयमनु सेवन करवा तत्पर शा भाटे न थवु? धतिशम,

भुनिराजश्री कुर्मविजयः.

## सुचना,

सर्व सज्जनोंसे नम्र विज्ञप्ति है। कोइ मुझे आचार्य, कोइ जैनाचार्य कोइ धर्माचार्य कोइ उपाध्याय, कोइ पंन्यास, कोइ शास्त्रविशारद कोइ विद्याविशारद कोइ विद्यावारिधि कोइ न्यायविशारद कोइ मुनिरत्न कोइ प्रसिद्धवक्ता कोइ प्रखरविद्वान् कोइ भारतभूमास्कर इत्यादि भनः कल्पित अपनी अपनी इच्छानुसार उपाधि-टाइटल-पदवियां लिखकर भारी बनाते हैं, विलकुल अन्याय होता है। क्योंकि न तो मुझे किसीने कोइ भी उपाधि दि है, न मैंने ली है, और न मैं किसी उपाधिके लायक हुं। अतः स्वर्गवासी जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्दसूरि महाराजका बक्षीशकी मुनि उपाधिके अतिरिक्त अन्य कोई भी उपाधि मेरे नामके साथ कोइ भी महाशय न लिखें। इति। हस्ताक्षर मुनि वल्लभविजयः

## यथावलेकुन्.

श्री हंसविजयः कैन श्री लाघवेरा वडोहराने नीन वर्षना रीपोर्ट-अमोने अभिप्रायार्थे बेट भणेलो छे. वडोहरा शहेला जहेहर कता उपर अमोने अने अने अने अने एक सरणे लाल द्वारताथी आपनार उपरोक्ता श्री लाघवेरा इ के कार्ये लेह न राखता वडोहरा शहेर्भावाचननी अभिवृद्धि डेम वधे तेवा शुल उद्देश्यी कार्य करती जोह अने तेमनो आ रीपोर्ट वाची अमोने आनंद थाये छे अने तेना शीखुता सेफेटरी अने कार्य वाहडेना ते उत्साह भाटे धन्यवाद आपाये छीये.

रुक्मिणी डेणवथी लेतां कैन विद्याधीमिन भवती सगरडे रुक्मिणी यावती थुडा भरी खाडवामा आवतो प्रयास अने वेर घेडा स्थिति आटे सरक्युलेठिंग श्री लाघवेरीनी योजना अने प्रयत्न, आ ए कार्ये एक डेणवथीने उत्तेजन अने स्थिति वाचनना आपवामा आवतो लाल साथे हेवाथी धारुं प्रश्नसनीय कार्ये छे, अने लाप्तशु श्रीणीवी साथे संठणना हेवाथी उक्त लाघवेरी निमिते वडा अने शोताना विचारेती आप ले यती आ रीपोर्ट उपर्युक्त जालुवामा आवे छे ने जमाने अनुसरतुं कार्य हेवाथी परंपराम्ये लालाद्या छे।

आ लायवेरीनी घेडन अने नृषु प्रकारना लाघव भेदभरेथी अनेतो जनरत भीरीग अने आलु कार्य करवा भाटे एक भेनेश्वरं हंथीटी छे के तेना अधार्थ अने धारा प्रभाषु कार्य करे छे. आ वर्षमा भेदभरेती सारी संघ्यानी वृद्धि थयेली लेवामा आवे छे, उक्त लाघवेरीनो कार्य डेम अने प्रवृत्ति अने कार्य वाहडेना उत्साह डंचा प्रकारनो लेवामा आवे छे, अमो तेनी अविष्यमा आभाव धृच्छीये छीये अने सर्व अधुयो। ( कैन अने नैनेतर अधुयो ) ने आ लाघवेरीने सहाय करवा लालामणु करीये छीये।

## प्रक्षीर्णु नोंधना संधमां अमारे भुक्तासो।

प्रस्तुत पत्रना आहेवा मासना अंडमां आवेद प्रक्षीर्णु नोंधमां लेवायेली हुक्कित उपरथी मुनिराजश्री रामविजयल्लासे आ सभानी विळळ एक हेन्डणील अभारी मान्यता प्रमाणे अत्रेनीपर्युषण्य पर्वना दिवसोमां वंचाता कळपसूत्र व्याख्यानमां थयेल अडयाणु अने सांबगवानी पउली अवेद लेथी उत्पन्न थधुते परि स्थितिनी डेटलोक गेर सभाज थयेल होवाने अंगे प्रकट थयेलुं संलवे छे. आ सभा अत्यार सुधी हेवदृव्य संधमां वर्चमां तटस्थ रहेल छे, तेमज ते प्रक्षीर्णु नोंधमां जैनपत्र संधमां ठांडपण्य उल्लेख अथवा नाम भाव लेवायेव नथी तेमज तेमां ते वर्खते वहेंचायेल केाळ पण्य हेन्डणील विळळ लखवामां आवेद नथी परंतु अन्ने कळपसूत्रना वंचाता व्याख्यान वर्खते अंगे आज्ञुना वहेंचायेला हेन्डणील के अनेला अनावतुं भाव दिग्दर्शन कराववानी जडीरीयात जाणी ते नोंधमां लेवायेव हुती ते हुक्कितने जुहा स्वळपमां मुनिराज श्री रामविजयल्ल सभालया होय तेम संलवे छे. तेच्या श्रीचे हेन्डणील प्रकट कर्या पहेलां अमारे अंगत भुक्तासो पुछवानी जळू छे. अस्तु ! आ सभा जे आतः सभराष्यीय परम पूज्य शुद्धवर्यना नाम साथे लेडयेल छे, तेच्यु कहापि असत्यने पुष्टि आपीज नथी भविष्यमां पण्य तेवी उच्चार राखती नथी अने सत्यनेज याहुनार छे तेमज हुवे पछी आ संधमां जवाण्या आपी डे भीलु रीते क्लेशमय वातावरणु वधारी सभाजने क्लेशतुं नवूनिमित्त अनवाथी हमेंशा इर रहेवा भागे छे.

आत्मानं द भक्तास मासिक कभीठी  
( कार्य वाहका )

## वर्तमान सभाचार.

### बीकानेरके प्रशंसनीय समाचार ॥

- (१) जैन पाठशालाके फन्डमें ५०००० हो चुके हैं ।
- (२) पंन्यासश्री सोहनविजयजी और पण्डित हंसराजजी शास्त्रीके प्रभावशाली उपदेशोंके प्रभावसे यहां के कईमाननीय जैनोंने “ वेश्या नृत्य ” न करानेकी प्रतिज्ञा की है ।
- (३) श्रीमान शेठ हजारीमलजी कोंचरने अपनी रुक बहु मूल्य कोट्ठी श्री जैनपाठशालाको भेट करदी है ।
- (४) संघ की तरक्से मुनिश्री बलभविजयजी महाराजको विनंति की गई है ।

कि “अपणा चारुमास बीकानेर में करें” आशा है कि मुनिश्री ऐसे लाभप्रदक्षेत्र को न छोड़ेंगे ।

- (५) बीकानेर संघ की तरफसे जीवदया विषयक संस्थाओं को ५००) का दान भेजा गया है ।
- (६) खाम गाँव निवासी यतिश्री बालचन्द्राचार्यजी यहां पधारे हुवे हैं अब उनके द्वाराख्यान होंगे ।

### शहेर भावनगरभां अद्वाध भहेत्सव.

शेड परलुदास तथा हरलुवनदास हीपर्यंदना स्वर्गवासी पिताशी तथा मातुश्रीना ऐसे निभिते भोटा छनाक्षयभां आशा वही २ थी अद्वाध भहेत्सव शहौ थयेव छे, साथै चुरीशीत समन्वयरथ्यनी रथना पथु करवाभां आवी छे हरदैरज विविध पूजाओं अस्त्रवानाभां आवे छे साथै स्वामीवात्सत्य करवाना छे. देवगुड़ी भजित साथै भातपितानी धार्मिकभजित पथु आवा कार्यो निभिते सुपुत्रोथी थाय छे. शेड हरलुवनदास आ सकाना सेहुटरी होवाथी साथै आ सकाना गानभाताने पथु सहाय आपी छे.

### शहेर पालीताणुभां उपधान वहन तपनी शहौ थयेल ठिया

आचार्य श्री आनंदसामरण महाराजना सहृदयपठेशरी ज्ञानगर निवासी वेदा योपत्ताल धारथी तरहथी आशा शुद्ध १० थी उपधान वहन करावयातुं शहौ थयुं छे सांखणा भ्रमाथे शुभारे त्रिष्णुरेह छहेनो अने भूम्हेया दाखव थयेव छे. भगवी उत्तम लक्ष्मीनो उत्तम वय त्वा सारा प्रभाष्यभां वृद्धु योपत्ताल करे छे. उक्त वृद्धुने नअ सुन्यना करीये छाये ह वे करो छो ते साथै डेवष्टुने महाव अने महाव करवा लायडेव्युओनी स्थिति सुधारथायें पथु जारी होया आपवानी ज३२ छे.

### आ सभाए उरेल ठरावे.

ता. २६-१०-१६२० शुक्रवारना दैरज आ सकानी ओह जनरल नीटींग भणी हुती, जेमां नीथे मुझब ठरावे थया हुता वे प्रकट करवाभां आवे छे.

१ गया वेशाक भासभां प्रवर्तीक्षु महाराज श्री कान्तिविजयजु वजेदे शुनिमहाराजभेने श्री पालीताणुथी अने वातुभास करवा भाटे पालीताणु जर्ह विनंति करवा जवा भाटे दृश्य शुद्धस्थाना सही साथेतुं ओह विनंति पन्न छ्हा संधनी कमीटीने भिक्षवाभां आवेव, वेनो हज्जु सुधी कांधपथु निर्व्यु उं अमद करवाभां आव्यो नथी तेने भाटे आ सका हीवगीर छे, अने हुवे पशी तेवा लोह-काषवाणा विश्वारौ हूर करी तेभ नहीं थवा आ सका श्री संधना आगेवानेने लक्षामधु करे छे.

२ मुनिसाज श्रीशमविजयजु महाराजे गया लाइरवा वही १३ना दैरज तेजोये प्रकट करेल हेन्दणीतनी अंदर आ सकाने भाटे वे अयोग्य लग्घाषु कर्हुं छे, तेने भाटे आ सका हीवगीर छे अने आ सका निरंतर सत्य वातनेज चाहुनारी छे.

श्री जैन आत्मानं द सक्षा—भावनगर,

## “ हसो अने पुष्ट अनो। ”

“ टैकिरेंड कहेतो कृ गमत असाधारण ताजगी आये छे, अम मने मालुम पहुंचे। “ हसो अने पुष्ट अनो। ” एकहेवतमा सारी दिलसुरी रहेती छे। हसनामा शरीरने भजन्नुती आपवानी अने छुंदगी लाखी करवानी शक्ति रहेती छे, अम हरेक जथ नाशतुं हेत तो माणसोना भेंडा उपर हाल ने हिंसारीनी थाया छवाइ रहे छे ते धबे बागे नीडणा जात अने हजारो वैद्योने धंधो नीडणी जात, आपणा छवन व्यवहारमा एक उदापण भरेला हेतु तरीक डाम आवे ते भाटे हसवानी शक्ति आपथने आपवामा आवी छे। आंदरनी धन्द्रियोने कसरत आपवा भाटे तथा ते साथे आपशुने आनंद आपवा भाटे आ एक हुदरतनी युक्ति छे। इहसामा अने पेटना वस्त्रे ना पउदामा तेनी थरआत थाय छे। लिवर (यहूत), पठ, अने भोज अंदरता अवयवोने ते एक उडपवाण, आनंद लनमा भूँ छे, जे वडे, दोडा उपर स्वारी करवाथी ने आनंदगनक असर थाय छे, कसरत मणे छे, एवी असर अने कसरत थाय छे, हृदय वधारे जल्ही चाले छे, इहाँ भान्तुं लोही तथा शरीरमा फूरी वणे छे, श्वासेश्वास वधे छे, अने आआ शरीरने वरभी अने प्रकाश भणे छे। हसवाथी अधिमा प्रकाश आने छे, परसेवा वधे छे, छाती पहेणा थाय छे, ओछामा ओछा वपराशवाणा फैहसाना छिद्रमाथी उरी हवा नीडणी नाय छे अने शरीरना सधणा धर्मना एकता सुक्ता आचारथी ने आरोग्य, आरोग्यने लगतुं सुंदर सम तोलपणुं आवे छे ते ते आये छे। आ मुद्दु-नाञ्जुक समतोलपणुं जे एक उध विनानी रात्रिथी, भराब भरारथी, उद्गग अगरविंताथी घसी जय छे ते धाणी वधत एक सारा, अंतःकरणुना हसवाथी पूरेपूरुं फूरी मणे छे। एक आनंदी डोक्टर अगर वैद्य तेना सधणी गोणीओ। धर्ता धर्थी वधत सारो थर्प फडे छे।

“ उद्गग अगर गुरसा भाटे भाणसोने उत्पन्न करवामा आव्या नथी एम एक अर्वाचीन लभनार कहे छे। पोताथी भनी शक्ति ते सधणां भध अने आनंद चोतानी भद्धारथी तेम अंदरथी ऐंचवुं ए हरेक जथुनी इरेन के वधारे तो तेणु सधणी वस्तुओनी जिजणी नाला नारेन जेवुं जेधये। सर्वधी प्रकाशित हिंसाओने धुम्भस, वाहणा अने वराण वणगी रहे ए आशा जेम निरथंक छे तेम ज्यारे डोध आनंदी भाणस आवी भरा अंतःकरणथी “गुड भोनिंग” (सलाम) कहे छतां डोधपणु चहेरा उपर क्लेष, उद्गग रुक्षो अग्रणी छे। जे डोध तमने मणे तेनी साथे रिमत सहित वात करवाने युक्ता नाला उच्चागी अपन सुभी ज होय।

“ आगज धसो। ” भांधी।

नीयेना अथो वगेरे लेट भणेत्रा छे के उपार साथे स्वीकारीये छीये.

१ श्री नेमीनाथ चन्द्रिन संस्कृत-मुनिराजश्री पुष्पविजयल तरहथी.

श्री जैन युवक भंडण-लावनगरनो प्रथम वर्षनो रीपोर्ट-उक्ता भंडण तरहथी.

### आचार्य श्रीभानू विजयकुमारसूरीजीनी जयंती.

प्रातः २८२६३३ श्रीभानू भूलयंदल महाराजना शिष्य उक्ता आचार्य महाराजनी आशो शुद्ध १० ना रोज स्वर्गवास तीथी ढोवायी अकिन निभिते अत्रेना भोटा इनालयमां श्री आदि-नाथ भगवाननी पांचलयाणुकुनी पूजा ( श्रीभानू वृक्षलविजयल महाराज इत ) अणुवावामां आती होती. सर्वेषे अकिनमां सारो लाला लीयो होतो. आता गुरुअकिना कार्यमां उक्ता स्वर्ग-वासी महात्माना परिवार भंडण गुरुअकिन निभिते दरेक भोटा शहेरमां वधारे सारा प्रभाण्डमां आ महाभानी जयंती दरवधे उज्जवाय ते भाटे उपदेश वगेरे करी अगीर्य प्रपत्न उक्तावानी जड़े ऐ. गुरुअकिनानु आ कार्य तेऽश्रीना शिष्य भंडण उपायी लेश भेजा अमो विनांति करीये छीये.

### बाधुसाहेल रायपुर्दस्तु अहादुरनो स्वर्गवास.

अजिमगंज निवासी उक्ता श्रीभानू वृहुस्थ गया लाहरवा भासमां वृद्धवये पांचत्व पाभ्या छे. तेऽश्री उहार हुद्यना धर्मयुस्त अने उहार नश्वरत्न होता. तेभना स्वर्ग लालुथी जैन डोभमां खरेपर एक अथगण्य आगेवाननी घोट पडी छे ते न पुरी शकाय तेवी छे. तेभना अने पुत्रोने अमो अंतःकरण्य पूर्वक हीवासो आपीये छीये अने तेभना पवित्र आत्माने परमशांति प्राप्त थायो तेभ प्रार्थना करीये छीये.

### अभारी सखातु ज्ञानेऽधार खातु.

- |   |   |
|---|---|
| १ सुभुध नृपादिभित्र यतुङ्क कथा था.                | ११ विज्ञप्ति संचार.                       |
| २ उसमयं दीरुल्लभासपाठयावाणातरहथी.                 | १२ संस्तारक प्रकीर्तुक सटीक.              |
| ३ वैत्यवंदन भाष्माय                               | १३ आवक्षवर्भविधि प्रसरण सटीक.             |
| ४ जैन भेद्यहन सटीक                                | १४ विजययं देवसूरि भाष्माय.                |
| ५ जैन अपातिलुहसिक गूर्जर रास संचार                | १५ विजयदेवसूरि भाष्माय.                   |
| ६ ग्राम्यीन जैन लेखसंग्रह द्वितीय लाग             | १६ जैन अथ प्रसितत संचार                   |
| ७ अंतगदशांगसूत सटीक अद्य निवासी                   | १७ लिंगानुशासन स्वेपण ( दीक्षा साथे )     |
| ८ जैन उज्जमण्डेन तथा दरडेवण्डेन तरहथी             | १८ धातु पारायण                            |
| ९ श्री कुदपसूत-ठीक्ष्यावणी शेठ दोलतराम            | १९ श्री नंदीसूत-श्री द्विलदसूरिकृत दीक्षा |
| १० वेणीयं द्वाना पुत्ररत्न रवद्यपयं दक्षाध तथा ते | २० सायेषुकारीवाणशेठ भोटीयं दमुरयं द तरहथी |
| ११ भनाधर्म पतिनाभाधयुनीभाधनीद्रव्यसंकायथी         | २१ श्री अनुतरोवाध-शा. कल्यानाभाध          |
| १२ श्री उपासकदशांग सूत्र शुद्धारीवाणा शेठ         | २२ नेमयं भंडानवाणा तरहथी                  |
| १३ शीताधरदास पत्नाभ                               | २३ शुश्रामाया ( भाषांतर ) शेठ हुक्कलज्ज   |
| १४ सिद्धभाष्टुत सटीक.                             | २४ देवाल रे. करवलीया-ननसासी               |
| १५ पट्टस्थानक सटीक.                               | २५ उपदेशसप्ततिका ( भाषांतर )              |